भौतिक तथा आध्यात्मिक प्रगति हेतु

अनुभूत साधना

'सप्तशती' के विविध प्रकार

'महा-चिति-स्वरूपा'
श्रीदुर्गा
आराधना

'प्राण-महा-शक्ति'
श्रीदुर्गा
साधना

विशेष
सम्पुट-प्रयोग
सहित

प्रकाशक : परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

"श्री दुर्गा सप्तशती" सम्बन्धी उपयोगी पुस्तकें

१. **विशुद्ध चण्डी (श्री दुर्गा सप्तशती)** — २५.००
सम्पूर्ण पूजा- विधि सहित श्री दुर्गा सप्तशती का शुद्ध संस्करण।

२. **अद्भुत दुर्गा सप्तशती** — १००.००
सात सौ श्लोकोंवाली दुर्गा सप्तशती। सुन्दर सजिल्द लाल स्याही में।

३. **मन्त्रात्मक सप्तशती** — ५००.००
श्री दुर्गा सप्तशती के सात सौ मन्त्रों में से प्रत्येक मन्त्र के अनुष्ठान की विधि।

४. **सार्थ चण्डी (श्री दुर्गा सप्तशती)** — २५०.००
गुप्तवती, शान्तनवी आदि प्रसिद्ध संस्कृत की टीकाओं के आधार पर हिन्दी में श्री दुर्गा सप्तशती के प्रत्येक श्लोक की विस्तृत व्याख्या।

५. **सप्त-दिवसीय श्री दुर्गा सप्तशती** — ३५.००
'पाठोऽयं वरकारः' सूत्र के अनुसार 'सप्तशती' का सप्त-दिवसीय पाठ-क्रम।

६. **सम्पुटित श्री दुर्गा सप्तशती** — ४०.००
'राहु-काल' में श्री दुर्गा सप्तशती का सम्पुटित पाठ-क्रम।

७. **श्री ललिता सप्तशती** — ४५.००
'त्रि-कूटों' से सम्पुटित श्री दुर्गा सप्तशती ।

८. **सप्तशती-तत्त्व** — ३०.००
श्री दुर्गा सप्तशती के ऐतिहासिक आख्यान की दार्शनिक व्याख्या ।

९. **रुद्र - चण्डी** — ०८.००
रुद्र-यामल तन्त्र में निहित सप्तशती-अनुष्ठान की विधि।

१०. **बीज-त्रयात्मक दुर्गा सप्तशती** — ०६.००
रहस्य - तन्त्र में निहित सप्तशती का अनुष्ठान।

११. **लघु चण्डी (हिन्दी अर्थ सहित)** — १५.००
श्री मद् - देवी भागवत में निहित सप्तशती का मूल-पाठ।

१२. **सप्तशती-सूक्त-रहस्य** — प्रेस में
सप्तशती की पाँच स्तुतियों की विस्तृत व्याख्या।

प्राप्ति-स्थान : श्री चण्डी-धाम, प्रयाग-२११००६ ०५३२-२५०२७८३

विशेष सम्पुट-प्रयोग-सहित

'चण्डी'

अनुभूत साधना

वर्ष-[illegible]

('सप्तशती' के विविध प्रकार)

प्रेरणा-स्तम्भ

प्रातः-स्मरणीय 'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल

सम्पादक

ऋतशील शर्मा

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

Website : www.paravani.org Email : chandi_dham@rediffmail.com

अनुदान ३५/-

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

वन्दे गुरोर्मण्डलम्!
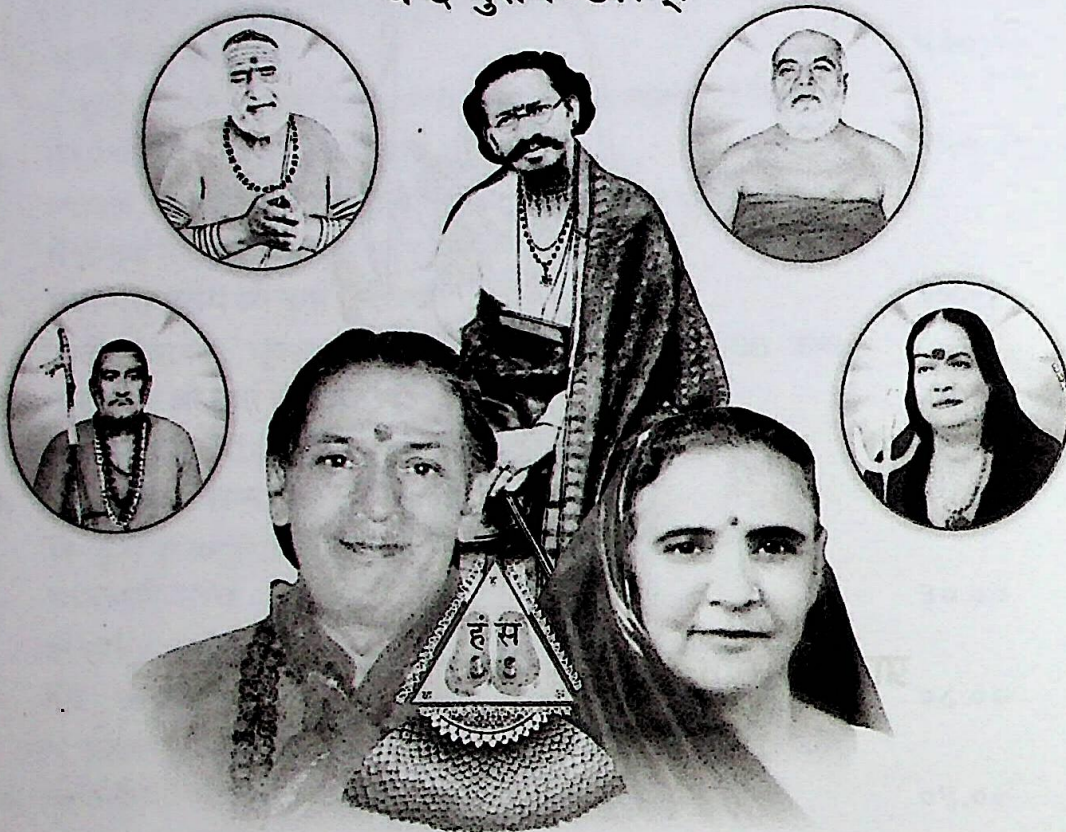
जिनकी 'दिव्य कृपा' से

प्रस्तुत अनुभूत साधना का प्रकाशन हो रहा है

तृतीय संस्करण

श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी, 'शोभन' सं० २०६७ वि०-०१ सितम्बर, २०१०

परा-वाणी प्रेस, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज (उ०प्र०)

अनुक्रम

या माया मधु-कैटभ-प्रमथनी,
या माहिषोन्मूलिनी,
या धूम्रेक्षण-चण्ड-मुण्ड-दलनी,
या रक्त-वीजाशनी ।
शक्तिः शुम्भ-निशुम्भ-दैत्य-मथिनी,
या सिद्ध-लक्ष्मी परा,
सा देवी नव-कोटि-मूर्ति-सहिता,
मां पातु विश्वेश्वरी ।।

अनुभूत साधना—एक परिचय

- **'अनुभूत साधना'** के रूप में प्रस्तुत पुस्तक में दस प्रकार की लघु साधनाएँ प्रकाशित हैं। इनके द्वारा **'शक्ति'** के आराधक भौतिक तथा आध्यात्मिक-दोनों प्रकार से लाभान्वित हो सकते हैं।
- हम सबके प्रेरणा-स्तम्भ **'कुल-भूषण'**-पं० रमादत्त शुक्ल जी ने दिव्य गुरु-मण्डल-गुप्तावतार बाबाश्री, राष्ट्र-गुरु स्वामी जी महाराज, कौल-कल्पतरु पं० देवीदत्त शुक्ल जी, स्वामी अक्षोभ्यानन्द जी सरस्वती, पूज्या माई जी आदि की दिव्य प्रेरणा से उक्त साधनाओं को जिज्ञासु बन्धुओं के कल्याणार्थ सर्व-प्रथम **'सप्तशती के विविध प्रकार'** के नाम से प्रस्तुत किया था।
- **'कुल-भूषण'** पं० रमादत्त शुक्ल जी के अनुसार दिव्य गुरु-मण्डल के द्वारा उन्हें यह दिव्य प्रेरणा प्राप्त हुई कि–"श्रीदुर्गा सप्तशती धर्म-ग्रन्थ सभी प्रकार के दुःखों, कष्टों और आपदाओं को समाप्त करने में पूर्णतया सक्षम है। इसके द्वारा उपासकों का अभ्युदय होता है और उनके सभी मनोरथ पूर्ण सफल होते हैं। अतएव आज के भौतिक रूप से अत्यधिक व्यस्ततावाले समय में, ऐसे अमोघ महान् स्तव-राज श्रीदुर्गा सप्तशती के विविध सरल एवं लघु पाठ-क्रमों को श्रद्धालु बन्धुओं के कल्याणार्थ प्रस्तुत किया जाना चाहिए।"
- दिव्य गुरु-मण्डल की उक्त दिव्य प्रेरणा के आधार पर शुक्ल जी ने श्रीदुर्गा सप्तशती के लघु पाठ-क्रमों का प्रकाशन किया। साथ ही उन्होंने श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग में पधारे जिज्ञासु बन्धुओं को प्रत्यक्ष रूप से तथा अपने डाक-पत्रों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से अनेक बन्धुओं को इसके द्वारा अपने मनोरथ पूर्ण करने का परामर्श भी दिया। शुक्ल जी के परामर्श के द्वारा जब अनेक बन्धुओं की समस्याएँ दूर हुईं तथा उन्हें विशिष्ट अनुभूतियों की प्राप्ति भी हुई, तब शुक्ल जी ने कहा कि ये अनुभूत साधनाएँ–न केवल सरल हैं अपितु अपने आप में मूल साधना भी हैं। इन्हें नित्य नियमित रूप से करके कोई भी बन्धु अपना व अपने परिवार का कल्याण कर सकता है।
- इस प्रकार यहाँ प्रस्तुत सभी **'अनुभूत साधनाएँ'**–उपयोगी, महत्त्व-पूर्ण एवं नित्य करणीय हैं। श्रद्धालु बन्धु इनमें से किसी एक को अथवा अपनी इच्छा तथा आवश्याकतानुसार क्रमशः सभी अनुभूत साधनाओं को करके अपना भौतिक तथा आध्यात्मिक कल्याण कर सकते हैं।

श्रीचण्डी-धाम , प्रयाग — **–ऋतशील शर्मा**

'अनुभूत साधना' (१)

'सप्त-श्लोकी दुर्गा' साधना

प्रस्तावना

'श्रीदुर्गा-सप्तशती' या **'चण्डी'** का हिन्दू-समाज में अत्यधिक आदर तथा प्रचार है। इसका मुख्य **कारण** यह है कि इसके द्वारा सभी प्रकार की अभिलाषाओं की पूर्ति होती है और दुःखों, कष्टों एवं आपदाओं का निवारण होता है। इसीलिए **'शत-चण्डी'**, **'सहस्र-चण्डी'**, **'लक्ष-चण्डी'** जैसे महा-यागों का आयोजन सारे देश में आज भी होता रहता है। इन महा-यागों में **'चण्डी'** अर्थात् **'श्रीदुर्गा-सप्तशती'** का ही विधि-वत् पाठ किया जाता है।

जब भी कोई आस्तिक व्यक्ति आधि-व्याधि से पीड़ित होता है, तब वह इसी स्तव-राज— **'श्रीदुर्गा-सप्तशती'** या **'चण्डी-पाठ'** की शरण लेता है और शीघ्र ही सभी सङ्कटों से मुक्त हो जाता है।

यही नहीं, अनेक लोग अपने अभ्युदय के लिए **'सप्तशती'** या **'चण्डी-पाठ'** के द्वारा **जगज्जननी का यजन-पूजन** करते रहते हैं और अपने मनोरथ को पूर्ण करते देखे जाते हैं।

'सप्तशती' में उद्धृत वचनों से **'सप्तशती'** के रचना-काल का निर्णय किया जा सकता है। **'सप्तशती'** की आदि रचना **महर्षि मेधा** के द्वारा **द्वितीय स्वारोचिष मन्वन्तर** के **'सत्य-युग'** में हुई थी। इस प्रकार कोई भी हिसाब लगाकर 'सप्तशती' के आविर्भाव के गत करोड़ों वर्षों के काल को ज्ञात कर सकता है। यह **'मन्त्र-मय दिव्य ग्रन्थ'** तभी से **'मन्त्र-शास्त्र'** का प्राण बना हुआ है।

उक्त **'मन्त्र-मय दिव्य ग्रन्थ'— 'सप्तशती'** के **'शत-चण्डी'**, **'सहस्र-चण्डी'** आदि महा-अनुष्ठान आज बहुत ही कठिन एवं दुःसाध्य हैं। समयाभाव के कारण तो आज-कल लोग सम्पूर्ण **'सप्तशती'** का विधि-वत् **'पाठ'** भी नहीं कर पाते। **'स्तोत्र'** या **'मन्त्र'** तभी सिद्धि-दायक होते हैं, जब वे **'कण्ठस्थ'** होते हैं और उनका **'पाठ'** या **'जप'** पूर्ण श्रद्धा के साथ होता है। पूरी **'सप्तशती'** को कण्ठस्थ करना आज-कल बहुत कम लोगों के लिए सम्भव है। ऐसी स्थिति में हमारे ऋषियों द्वारा **'सप्तशती'** के लघु प्रयोगों के रूप में **'सप्त-श्लोकी दुर्गा'**, **'त्रयोदश-श्लोकी दुर्गा'** आदि का उपदेश हुआ है, जिन्हें हम कम समय होने पर भी कण्ठस्थ कर अपने सभी मनोरथों को सिद्ध कर सकते हैं।

अतः जो बन्धु आध्यात्मिक उपायों द्वारा अपने मनोरथ सिद्ध करना चाहते हों, उन्हें **'सप्त-श्लोकी दुर्गा'**, **'त्रयोदश-श्लोकी दुर्गा'** आदि लघु प्रयोगों की ओर सबसे पहले विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। इन्हें कण्ठस्थ कर अपनी **'नित्य की साधना'** करनी चाहिए। इससे सभी मनोरथों की सिद्धि होती है।

'साधना' के सामान्य नियम

☐ (१) साधक **मन, वचन, कर्म से पवित्र** रहे। मन में अशुद्ध भावों का प्रवेश न होने दे।

☐ (२) साधना का स्थान **एकान्त, शान्त** और **पवित्र** होना चाहिए।

☐ (३) साधना **नवरात्र, शिव-रात्रि, दीपावली, जन्माष्टमी** या **चन्द्र-ग्रहण** जैसे अनुष्ठान-सिद्ध विहित शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ करनी चाहिए।

☐ (४) **'पाठ' पूर्व** या **उत्तराभिमुख** बैठकर करना चाहिए। यह **श्रेष्ठ** माना गया है।

☐ (५) **'आसन'** आरम्भ में जो बिछाया जाए, वही अन्त तक रहना चाहिए। दूसरे शब्दों में **'आसन'** बार-बार बदलना न चाहिए। लकड़ी का पटड़े, प्रस्तर-शिला का उपयोग **'आसन'** के रूप में नहीं करना चाहिए। **कुश-आसन, ऊर्णासन** और **कम्बलासन** पवित्र माने गए हैं। **'आसन'** का प्रयोग केवल अपने ही द्वारा होना चाहिए। किसी अन्य को उस पर बैठने नहीं देना चाहिए। **'आसन'** को झटक कर उठाना मना है। यदि अचानक ऐसा कोई समय आ जाय, तो **'आसन'** को लपेट कर उठा लिया जाए और पुनः उसी को बिछा लिया जाए।

☐ (६) **'स्तोत्र-पाठ'** करने के पूर्व **षोडशोपचार** या **पञ्चोपचार पूजन-सामग्री** माँ के पूजन के लिए एकत्र कर लें। यदि आपके पास कुछ भी नहीं है, तो मात्र **पुष्प** और **अक्षत** (चावल) रख लें। **'पाठ'** करते समय बीच में बार-बार उठना अनुचित है। जितना **'पाठ'** करना नित्य निश्चय किया हो, उतना करके ही उठना उत्तम है।

☐ (७) **'पाठ'** करने से पूर्व उदय-कालीन सूर्य के समान प्रकाशमान तथा देवताओं को प्रसन्न करनेवाले और अभीष्ट-फल देनेवाले रूप में **'स्तोत्र' का ध्यान** करें एवं निम्न रूप से उसे **नमस्कार** करें— **"हे स्तोत्र-राज, हे ज्ञान के देनेवाले प्रभो! आपके लिए बारम्बार नमस्कार है। आप धर्म अर्थ, काम, मोक्ष को देनेवाले ब्रह्म-स्वरूप हैं।"**

☐ (८) दीक्षा-प्राप्त साधक को स्तोत्र-पाठ के पूर्व **गुरु का ध्यान व पूजा** करनी चाहिए। **इष्ट-देवता का पूजन** व **इष्ट-मन्त्र का जप** करना चाहिए। तदनन्तर अपने सम्मुख **घृत** या **तैल का दीपक** जला कर स्थापित करे और उसकी ज्योति में **'भगवती श्री दुर्गा का ध्यान** कर उनका **'पञ्चोपचार-पूजन'** कर **'पाठ'** हेतु **'सङ्कल्प'** करना चाहिए।

☐ (९) **'सङ्कल्प'** कर चुकने पर **'स्तोत्र का पाठ'** करे। एक से अधिक आवृत्ति करे, तो केवल प्रथम पाठ में **विनियोगादि** का पाठ करे। शेष आवृत्तियों में केवल मूल-पाठ के श्लोकों को ही दुहराना चाहिए। **'पाठ'** की समाप्ति के बाद **'क्षमा-प्रार्थना'** कर **'पाठ'** का फल मन-ही-मन देवता को समर्पित करना चाहिए।

☐ (१०) **'सप्त-श्लोकी दुर्गा'** का **तीन, पाँच** या **सात पाठ,** जैसी भी आपकी शक्ति और श्रद्धा हो, नित्य-पाठ का सङ्कल्प कर सकते हैं। सात या अधिक विषम-संख्यक पाठ करने से साधक पूर्ण आनन्द-मय दिव्य नित्यानन्द-भाव को प्राप्त हो जाता है।

साधना-विधि

[१] आत्म-शोधन

प्रातः-काल एवं रात्रि में भोजन से पूर्व निश्चित समय पर, शुद्ध होकर, शुद्ध वस्त्र पहनकर, शुद्ध स्थान में पूर्व या उत्तर की ओर मुँह करके बैठे।

पूजा-स्थान में अपने सम्मुख पहले से स्थापित **'पञ्च-पात्र'** के जल में, निम्न मन्त्र से **'अंकुश-मुद्रा'** द्वारा **'सूर्य-मण्डल'** से तीर्थों का आवाहन करे—

ॐ गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि! सरस्वति!

नर्मदे सिन्धु कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

फिर 'पञ्च-पात्र' से बाँएँ हाथ की हथेली में जल लेकर, निम्न-लिखित मन्त्र पढ़ते हुए उस जल को दाएँ हाथ की मध्यमा-अनामिका अँगुलियों से अपने ऊपर छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं, स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

[२] आचमन

'आत्म-शोधन' करने के बाद **'पञ्च-पात्र'** से पुनः दाएँ हाथ में जल लेकर तीन बार आचमन करे —

१ ॐ आत्म-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

२ ॐ विद्या-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

३ ॐ शिव-तत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

[३] माँ गायत्री का ध्यान

अब हाथ जोड़कर **माँ गायत्री** का ध्यान करे—

ॐ मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणैः,

युक्तामिन्दु-निबद्ध-रत्न-मुकुटां तत्त्वार्थ-वर्णात्मिकाम्।

गायत्रीं वरदाभयांकुश-कशां शूलं कपालं गुणम्,

शङ्खं चक्रमथारविन्द - युगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे।।

अर्थात्— माँ गायत्री पाँच मुखवाली हैं— १. 'मुक्ता' अर्थात् मोती- जैसा, २. 'विद्रुम' अर्थात् मूँगे जैसा, ३. 'हेम' अर्थात् सुवर्ण- जैसा, ४. 'नील-मणि' जैसा और ५. 'धवल' अर्थात् गौर वर्ण जैसा। इससे यह बोध होता है कि माँ पञ्च-प्राण-धारिणी हैं।

माँ गायत्री के तीन आँखें हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि माँ त्रि-विद्यावाली हैं।

माँ गायत्री के रत्न-जटित मुकुट पर चन्द्रमा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि माँ ज्योतिर्मयी अमृत-वर्षिणी हैं।

माँ गायत्री शब्द-ब्रह्म-स्वरूपा हैं। नाद महा-शक्ति या मनो-मयी स्पन्द-शक्ति हैं। सब दैवत इन्हीं के रूप हैं, जो भिन्न-भिन्न गुण-क्रिया के अनुसार भिन्न-भिन्न नामों से प्रसिद्ध हैं।

[४] श्रीगायत्री-मन्त्र-जप

ध्यान कर चुकने पर **'श्रीगायत्री-मन्त्र'** का **११ बार** जप करें। सम्भव हो, तो पूरी **'सन्ध्योपासना'** करें। (देखें **'श्री गायत्री-कल्पतरु'** नामक पुस्तक के पृष्ठ ४६ से ५६)।

श्रीगायत्री-मन्त्र—ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

अर्थात् 'ॐ' में निहित इच्छा-क्रिया-ज्ञान, सृष्टि-स्थिति-संहार, सत-रज-तम आदि शक्तियों को पुष्ट करनेवाले और भू-लोक (मृत्यु-लोक), भुवर्लोक (अन्तरिक्ष) एवं स्वर्लोक (स्वर्ग-लोक) को जीवन्त बनाए रखनेवाले श्री सविता देवता (सूर्य देव) का वह श्रेष्ठ 'तेज' हमारी धियों (मन, बुद्धि, चित् और अहं) को अग्रसर होने को प्रेरित करें। उस 'तेज' का हम ध्यान करते हैं।

(**गायत्री-मन्त्र** में **'भर्गः'** अर्थात् **'तेज'** ही **अन्तः-करण-चतुष्टय** को उन्नत होने की प्रेरणा देता है। अतः इस **'श्रेष्ठ तेज'** का ही ध्यान करना चाहिए।)

श्रीगायत्री-मन्त्र-जप का समर्पण

११ बार गायत्री-मन्त्र का **जप** कर चुकने पर हाथ जोड़कर **जप के फल** को **माँ गायत्री-श्रीसविता देवता** की प्रसन्नता-प्राप्ति हेतु समर्पित करें। यथा—

अनेन कृतेन श्रीगायत्री-मन्त्र-जपेन श्रीसविता-देवता प्रीयतां नमः।।

(५) सप्त-श्लोकी चण्डी-पाठ

श्रीगायत्री-मन्त्र-जप के बाद **'सप्त-श्लोकी चण्डी'** का विधि-वत् पाठ करें। यथा—

।।पूर्व-पीठिका— श्री शिव उवाच।।

देवि! त्वं भक्ति-सुलभे, सर्व-कार्य-विधायिनी।
कलौ हि कार्य-सिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः।।

।।श्री देवी उवाच।।

शृणु देव! प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्ट-साधनम्।
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बा-स्तुतिः प्रकाश्यते।।

।।सङ्कल्प।।

ॐ तत्सत् (ब्रह्म ही एक-मात्र सत्य है) **अद्यैतस्य** (आज इस) **ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे** (ब्रह्मा के प्रथम दिवस के दूसरे पहर में) **श्वेत-वराह-कल्पे** (श्वेत-वराह नामक 'कल्प' में)

जम्बू-द्वीपे ('जम्बू' नामक द्वीप में) **भरत-खण्डे** ('भरत' के भू-खण्ड में) **आर्यावर्त्त-देशे** (आर्यावर्त्त नामक 'देश' में) **अमुक पुण्य-क्षेत्रे** (अमुक पवित्र 'क्षेत्र' में) **कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे** ('कलि-युग' में 'कलि' के प्रथम चरण में) **अमुक-संवत्सरे** (अमुक 'संवत्सर' में) **अमुक-मासे** (अमुक 'मास' में) **अमुक-पक्षे** (अमुक 'पक्ष' में) **अमुक-तिथौ** (अमुक 'तिथि' में) **अमुक-वासरे** (अमुक 'दिवस' में) **अमुक-गोत्रोत्पन्नो** (अमुक 'गोत्र' में उत्पन्न) **अमुक-नाम-शर्मा-वर्मा-दास** (अमुक 'नाम' वाला 'शर्मा' 'वर्मा', 'दास') **श्रीमहा-काली-महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वती-देवता-प्रीति-पूर्वक अमुक-कामना-सिद्ध्यर्थं** (श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती की प्रसन्नता-पूर्वक अमुक 'कामना' की सिद्धि के लिए) **मार्कण्डेय-पुराणान्तर्गत-सावर्णिक-मन्वन्तरीय-देवी-माहात्म्यस्य** ('मार्कण्डेय पुराण' के अन्तर्गत 'सावर्णि-मन्वन्तर' से सम्बन्धित 'देवी-माहात्म्य' के) **सप्त-श्लोकी दुर्गा-स्तोत्रस्य अमुक-संख्यक-पाठमहं करिष्यामि** ('सप्त-श्लोकी दुर्गा-स्तोत्र' का अमुक - 'संख्यक' पाठ मैं करूँगा।)

उक्त सङ्कल्प-वाक्य में जहाँ-जहाँ **'अमुक'**-शब्द है, वहाँ-वहाँ सम्बन्धित नाम का उच्चारण करना होता है। जैसे **'अमुक-संवत्सरे'** के स्थान पर आजकल **'खर-नाम-संवत्सरे'** कहा जायगा क्योंकि **विक्रम सम्वत् २०५५** का नाम **'खर'** है। इसी प्रकार **मास, पक्ष** आदि का नामोल्लेख किया जाता है। यही नहीं, जहाँ भी जैसा परिवर्तन आवश्यक हो, वैसा सुधार कर लिया जाता है। जैसे, पाठ-कर्ता यदि **'शर्मा'** नहीं है, तो **'वर्मा'** आदि पदों का उच्चारण करना चाहिए। पाठ यदि दक्षिण भारतीय स्थान में करना हो, तो **'आर्यावर्त्त'** के स्थान पर **'दक्षिणावर्ते', 'दक्षिण-भारते'** आदि शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए।

॥विनियोग॥

ॐ अस्य श्रीदुर्गा-सप्त-श्लोकी-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा-विष्णु-रुद्राः ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभः छन्दांसि, श्रीमहा-काली-महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वती देवताः, श्रीनन्दा-शाकम्भरी-भीमाः शक्तयः, श्रीरक्त-दन्तिका-दुर्गा-भ्रामर्यः बीजानि, अग्नि-वायु-सूर्याः तत्त्वानि, ऋग्-यजुः-साम-वेदाः स्वरूपाणि, सकल-कामना-सिद्धये श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीत्यर्थं सप्त-श्लोकी चण्डी-पाठे विनियोगः।

॥ऋष्यादि-न्यास॥

श्रीब्रह्मा-विष्णु-रुद्र-ऋषिभ्यो नमः शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-छन्दोभ्यो नमः मुखे। श्रीमहा-काली-महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वती-देवताभ्यो नमः हृदि। नन्दा-शाकम्भरी-भीमा-शक्तिभ्यो नमः नाभौ। श्रीरक्त-दन्तिका-दुर्गा-भ्रामरी-बीजेभ्यो नमः लिङ्गे। अग्नि-वायु-सूर्य-तत्त्वेभ्यो नमः गुह्ये। ऋग्-यजुः-साम-वेद-स्वरूपेभ्यो नमः पादयोः। सकल-कामना-सिद्धये श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीत्यर्थं सप्त-श्लोकी-चण्डी-पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

	षडङ्ग-न्यास—	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
१	खड्गिनी शूलिनी घोरा, गदिनी चक्रिणी तथा, शङ्खिनी चापिनी वाण-भुशुण्डी-परिघायुधा—	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
२	शूलेन पाहि नो देवि! पाहि खड्गेन चाम्बिके! घण्टा-स्वनेन नः पाहि, चाप-ज्या-निःस्वनेन च —	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
३	प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च, चण्डिके! रक्ष दक्षिणे, भ्रामणेनात्म - शूलस्य, उत्तरस्यां तथेश्वरि! —	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
४	सौम्यानि यानि रूपाणि, त्रैलोक्ये विचरन्ति ते, यानि चात्यर्थ-घोराणि तै, रक्षास्मांस्तथा भुवम् —	अनामाभ्यां हुं	कवचाय हुं
५	खड्ग-शूल-गदादीनि, यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके! कर- पल्लव - सङ्गीनि, तैरस्मान् रक्ष सर्वतः —	कनिष्ठाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
६	सर्व-स्वरूपे ! सर्वेशे ! सवे - शक्ति - समन्विते ! भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते—	करतल- करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

॥ध्यान॥

ॐ विद्युद् - दाम-सम-प्रभां मृग-पति - स्कन्ध-स्थितां भीषणाम,
कन्याभिः करवाल - खेट - विलसद् - हस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्र - गदाऽसि - खेट - विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्,
विभ्राणामनलात्मिकां शशि - धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

अर्थात्— तेजोरूपा माँ दुर्गा बिजली के सदृश वर्णवाली हैं। मृग - पति अर्थात् सिंह के स्कन्ध या ग्रीवा (गर्दन) पर सवार हैं। भीषण अर्थात् डरावनी आकृतिवाली हैं। हाथों में करवाल— खड्ग और ढाल लिए कन्याओं से घिरी हैं। भुजाओं में १ चक्र, २ गदा, ३ खड्ग, ४ ढाल, ५ शर, ६ धनुष, ७ गुण (रस्सी या पाश) और ८ तर्जनी - मुद्रा (सावधान करनेवाली) रखे हैं। तीन नेत्रोंवाली हैं।

माँ दुर्गा विद्युत् (बिजली) के वर्णवाली हैं, इससे यह भाव है कि माँ दुर्गा के स्मरण - मात्र से सभी प्रकार के अन्धकार (अज्ञान) का नाश होकर प्रकाश (ज्ञान) का आविर्भाव होता है।

माँ दुर्गा सिंह पर सवार हैं। सिंह से ब्रह्मा, विष्णु और शिव के संयुक्त गुण का बोध होता है। अतः इसका भाव यह है कि माँ दुर्गा इच्छा - ज्ञान - क्रिया संयुक्त - गुण - बोधक आसन पर विराजमान हैं।

माँ दुर्गा भीषण हैं। भीषणत्व ब्रह्म की एक विशिष्ट लक्षणा है। इससे भाव यह है कि इससे सभी डरते हैं, यह किसी से नहीं डरती। इसी के डर से प्रकृति के सभी कार्य होते हैं।

माँ दुर्गा कन्याओं से वेष्टिता हैं। कन्याओं से प्रकाश - मण्डल, सृजन - शक्ति का भाव है।

माँ दुर्गा अष्ट -भुजी हैं। आठ भुजाओं से १ पृथ्वी, २ जल, ३ अग्नि, ४ वायु, ५ आकाश, ६ मन, ७ बुद्धि और ८ अहङ्कार— आठ प्रकृतियों का बोध है।

माँ दुर्गा शशि- धरा हैं। 'शशि' से अमृत-वर्षिणी शक्ति का बोध है।

माँ दुर्गा त्रिनेत्रा हैं। इससे यह भाव है कि माँ सर्व - साक्षिणी हैं। दिन में सूर्य - नेत्र से, रात्रि में चन्द्र - नेत्र से और सन्ध्या - समयों में अग्नि - नेत्र से देखती हैं। त्रिकालज्ञा हैं।

मानस - पूजन

उक्त प्रकार 'ध्यान' करने के बाद माँ दुर्गा का मानसिक पूजन करे—

ॐ लं पृथ्वी - तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीजगदम्बा - दुर्गा- प्रीतये समर्पयामि नमः।

ॐ हं आकाश - तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीजगदम्बा- दुर्गा- प्रीयते समर्पयामि नमः।

ॐ यं वायु - तत्वात्मकं धूपं श्रीजगदम्बा - दुर्गा - प्रीतये घ्रापयामि नमः।

ॐ रं अग्नि - तत्त्वात्मकं दीपं श्रीजगदम्बा - दुर्गा - प्रीतये दर्शयामि नमः ।

ॐ वं जल - तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीजगदम्बा - दुर्गा - प्रीतये निवेदयामि नमः ।

ॐ सं सर्व - तत्वात्मकं ताम्बूलं श्रीजगदम्बा - दुर्गा - प्रीतये समर्पयामि नमः ।

सप्त - श्लोकी चण्डी (मूल - पाठ)

'मानस - पूजन' के बाद सप्त - श्लोकी चण्डी - पाठ करे—

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि, देवी भगवती हि सा ।
बलादाकृष्य मोहाय, महा - माया प्रयच्छति ।। १

ॐ दुर्गे ! स्मृता हरसि भीतिमशेष - जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव - शुभां ददासि।
दारिद्र्य - दुःख - भय - हारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकार - करणाय सदाऽऽर्द्र - चित्ता ॥२

ॐ सर्व - मङ्गल - मङ्गल्ये ! शिवे ! सर्वार्थ - साधिके !
शरण्ये ! त्र्यम्बके ! गौरि ! नारायणि! नमोऽस्तु ते॥३

ॐ शरणागत - दीनार्त -परित्राण - परायणे !
सर्वस्यार्ति - हरे ! देवि ! नारायणि ! नमोऽस्तु ते ॥४

ॐ सर्व - स्वरूपे ! सर्वेशे ! सर्व - शक्ति - समन्विते!
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि ! दुर्गे ! देवि ! नमोऽस्तु ते ॥५

ॐ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा,
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणाम्,
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥६

ॐ सर्वा - बाधा - प्रशमनं, त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि !
एवमेव त्वया कार्यमस्मद् - वैरि - विनाशनम् ॥७

॥ फल - श्रुति ॥

ॐ य एतत् परमं गुह्यं, सर्व - रक्षा - विशारदम्।
देव्याः सम्भाषित-स्तोत्रं, सदा साम्राज्य-दायकम्।
शृणुयाद् वा पठेद् वापि, पाठयेद् वापि यत्नतः ।
परिवार - युतो भूत्वा, त्रैलोक्य - विजयी भवेत् ।

॥ क्षमा - प्रार्थना ॥

ॐ मन्त्र - हीनं क्रिया - हीनं, भक्ति - हीनं सुरेश्वरि !
यत् - पठितं मया देवि ! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

॥ पाठ - समर्पण ॥

ॐ गुह्याति - गुह्य - गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
सिद्धिर्मे - भवतु देवि ! त्वत् - प्रसादान्महेश्वरि! ॥

श्रीबटुक -उपासना

श्रीबटुक अष्टोत्तर - शत-नाम स्तोत्र का पाठ

'सप्त -श्लोकी चण्डी' का पाठ कर चुकने के बाद आपदुद्धारण श्रीबटुक भैरव अष्टोत्तर - शत-नाम स्तोत्र का पाठ करे—

॥ ध्यान ॥

वन्दे बालं स्फटिक - सदृशम्, कुन्तलोल्लासि - वक्त्रम् ।
दिव्याकल्पैर्नव - मणि - मयैः, किङ्किणी - नूपुराढ्यैः ॥
दीप्ताकारं विशद - वदनं, सुप्रसन्नं त्रि - नेत्रम् ।
हस्ताब्जाभ्यां बटुकमनिशं, शूल - दण्डौ दधानम् ॥

अर्थात् भगवान् श्री बटुक - भैरव बालक -रूपी हैं। उनकी देह - कान्ति स्फटिक की तरह है। घुँघराले केशों से उनका चेहरा प्रदीप्त है। उनकी कमर और चरणों में नव मणियों के अलङ्कार जैसे

किङ्किणी, नूपुर आदि विभूषित हैं। वे उज्ज्वल रूपवाले, भव्य मुखवाले, प्रसन्न-चित्त और त्रिनेत्र - युक्त हैं। कमल के समान सुन्दर दोनों हाथों में वे शूल और दण्ड धारण किए हुए हैं।

भगवान् श्री बटुक भैरव के इस सात्विक ध्यान से सभी प्रकार की अप - मृत्यु का नाश होता है, आपदाओं का निवारण होता है, आयु की वृद्धि होती है, आरोग्य और मुक्ति - पद लाभ होता है।

॥ मानस -पूजन ॥

उक्त प्रकार ध्यान करने के बाद श्री बटुक भैरव का मानस पूजन करे—

ॐ लं पृथ्वी - तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीमद् आपदुद्धारण-बटुक - भैरव - प्रीतये समर्पयामि नमः ।

ॐ हं आकाश - तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीमद् आपदुद्धारण-बटुक - भैरव - प्रीतये समर्पयामि नमः ।

ॐ यं वायु - तत्त्वात्मकं धूपं श्रीमद् आपदुद्धारण- बटुक - भैरव - प्रीतये समर्पयामि नमः ।

ॐ रं अग्नि - तत्त्वात्मकं दीपं श्रीमद् आपदुद्धारण - बटुक - भैरव - प्रीतये दर्शयामि नमः ।

ॐ वं जल - तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीमद् आपदुद्धारण- बटुक - भैरव - प्रीतये निवेदयामि नमः।

ॐ सं सर्व - तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीमद् आपदुद्धारण - बटुक - भैरव - प्रीतये समर्पयामि नमः ।

॥ मूल स्तोत्र ॥

ॐ भैरवो भूत - नाथश्च, भूतात्मा भूत - भावनः ।
क्षेत्रज्ञः क्षेत्र - पालश्च, क्षेत्रदः क्षत्रियो विराट् ॥१
श्मशान - वासी मांसाशी, खर्पराशी स्मरान्त - कृत् ।
रक्तपः पानपः सिद्धः, सिद्धिदः सिद्धि - सेवितः ॥२
कङ्कालः काल - शमनः, कला - काष्ठा - तनुः कविः।
त्रि - नेत्रो बहु - नेत्रश्च, तथा पिङ्गल - लोचनः ॥३
शूल - पाणिः खड्ग - पाणिः , कङ्काली धूम्र - लोचनः ।
अभीरुर्भैरवी - नाथो, भूतपो योगिनी - पतिः ॥४
धनदोऽधन - हारी च, धन - वान् प्रतिभाग - वान्।
नाग - हारो नाग - केशो, व्योम - केशः कपाल - भृत् ॥५

कालः कपाल - माली च, कमनीयः कला - निधिः ।
त्रिलोचनः ज्वलन्नेत्रस्त्रि - शिखी च त्रि - लोक - भृत् ।।६
त्रिवृत्त - तनयो डिम्भः, शान्तः शान्त - जन - प्रियः।
बटुको बटु - वेषश्च, खट्वाङ्ग - वर - धारकः ।।७
भूताध्यक्षः पशु - पतिर्भिक्षुकः परिचारकः।
धूर्तो दिगम्बरः शौरिर्हरिणः पाण्डु - लोचनः ।।८
प्रशान्तः शान्तिदः शुद्धः, शङ्कर - प्रिय - बान्धवः ।
अष्ट - मूर्तिर्निधीशश्च, ज्ञान - चक्षुस्तपो - मयः ।। ९
अष्टाधारः षडाधारः, सर्प - युक्तः शिखी - सखः ।
भूधरो भूधराधीशो, भूपतिर्भूधरात्मजः ।।१०
कपाल - धारी मुण्डी च, नाग - यज्ञोपवीत - वान्।
जृम्भणो मोहनः स्तम्भी, मारणः क्षोभणस्तथा ।।११
शुद्ध - नीलाञ्जन - प्रख्य - देहः मुण्ड - विभूषणः ।
बलि-भुग्बलि-भुङ्-नाथो, बालोबाल-पराक्रमः।।१२
सर्वापत् - तारणो दुर्गो, दुष्ट - भूत - निषेवितः।
कामीकला-निधिःकान्तः,कामिनी-वश-कृद्वशी।।१३
जगद् - रक्षा - करोऽनन्तो, माया - मन्त्रौषधी - मयः ।
सर्व - सिद्धि - प्रदो वैद्यः, प्रभ - विष्णुरितीव हि ।।१४

॥ फल - श्रुति ॥

अष्टोत्तर - शतं नाम्नां, भैरवस्य महात्मनः।
मया ते कथितं देवि ! रहस्यं सर्व - कामदम् ॥१
य इदं पठते स्तोत्रं, नामाष्ट - शतमुत्तमम् ।
न तस्य दुरितं किञ्चिन्न च भूत - भयं तथा ॥२
न शत्रुभ्यो भयं किञ्चित्, प्राप्नुयान्मानवः क्वचिद्।
पातकेभ्यो भयं नैव, पठेत् स्तोत्रमतः सुधीः ॥३
मारी - भये राज - भये, तथा चौराग्निजे भये।
औत्पातिके भये चैव, तथा दुःस्वप्नजे भये ॥४
बन्धने च महा - घोरे, पठेत् स्तोत्रमनन्य - धीः।
सर्वं प्रशममायाति, भयं भैरव - कीर्तनात् ॥५

॥ क्षमा - प्रार्थना ॥

आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजा - कर्म न जानामि, क्षमस्व परमेश्वर! ॥
मन्त्र-हीनं क्रिया-हीनं, भक्ति-हीनं सुरेश्वर!।
मया यत् - पूजितं देव! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

★★★

श्रीबटुक-बलि-मन्त्र

(१) ॐ ॐ ॐ एह्येहि देवी-पुत्र ! श्रीमदापदुद्धारण-बटुक-भैरव-नाथ ! सर्व-विघ्नान् नाशय नाशय, इमं स्तोत्र-पाठ-पूजनं सफलं कुरु कुरु सर्वोपचार-सहितं बलिमिमं गृह्ण गृह्ण स्वाहा। एष बलिर्वं बटुक-भैरवाय नमः।

(२) ॐ बलि-दानेन सन्तुष्टो, बटुकः सर्व-सिद्धिदः ।
रक्षां करोतु मे नित्यं, भूत-वेताल-सेवितः ॥

★★★

'त्रयोदश-श्लोकी दुर्गा' साधना

पूर्व-पीठिका

॥ श्रीशिव उवाच ॥

देवि ! त्वं भक्ति-सुलभे ! सर्व-कार्य-विधायिनी ।
कलौ हि कार्य-सिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः ॥

॥ श्रीदेवी उवाच ॥

शृणु देव ! प्रवक्ष्यामि, कलौ सर्वेष्ट-साधनम् ।
मया तवैव स्नेहेनाप्यम्बा - स्तुतिः प्रकाश्यते ॥

विनियोग—ॐ अस्य श्रीदुर्गा-त्रयोदश-श्लोकी-चण्डी (दुर्गा)-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा-विष्णु-रुद्राः ऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभः छन्दांसि, श्रीमहा-काली-महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वत्यो देवताः, श्रीनन्दा-शाकम्भरी-भीमाः शक्तयः, श्रीरक्त-दन्तिका-दुर्गा-भ्रामर्यः बीजानि, अग्नि-वायु-सूर्याः तत्त्वानि, ऋग्-यजुः-साम-वेदाः स्वरूपाणि, सकल-कामना-सिद्धये श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीत्यर्थं त्रयोदश-श्लोकी-चण्डी-पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास— श्रीब्रह्मा-विष्णु-रुद्र-ऋषिभ्यो नमः शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-छन्दोभ्यो नमः मुखे । श्रीमहा-काली-महा-लक्ष्मी-महा-सरस्वती-देवताभ्यो नमः हृदि । नन्दा-शाकम्भरी-भीमा-शक्तिभ्यो नमः नाभौ । श्रीरक्त-दन्तिका-दुर्गा-भ्रामरी-बीजेभ्यो नमः लिङ्गे । अग्नि-वायु-सूर्य-तत्त्वेभ्यो नमः गुह्ये । ऋग्-यजुः-साम-वेद-स्वरूपेभ्यो नमः पादयोः । सकल-कामना-सिद्धये श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीत्यर्थं त्रयोदश-श्लोकी-चण्डी-पाठे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

षडङ्ग-न्यास	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
१ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा, शङ्खिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघायुधा—	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
२ शूलेन पाहि नो देवि ! पाहि खड्गेन चाम्बिके ! घण्टा-स्वनेन नः पाहि चाप-ज्या-निःस्वनेन च—	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
३ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके ! रक्ष दक्षिणे, भ्रामणेनात्म-शूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि !	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
४ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते यानि चात्यर्थ-घोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्—	अनामाभ्यां हुं	कवचाय हुं
५ खड्ग-शूल-गदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ! कर-पल्लव-सङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः—	कनिष्ठाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
६ सर्व-स्वरूपे ! सर्वेशे ! सर्व-शक्ति-समन्विते ! भयेभ्यस्त्राहि नो देवि ! दुर्गे ! देवि ! नमोऽस्तु ते-	करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

ध्यान—

खड्गं चक्र-गदेषु-चाप-परिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः,
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्ग-भूषावृताम् ।
नीलाश्म-द्युतिमास्य-पाद-दशकां सेवे महा-कालिकाम्,
यामस्तौत स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ।।१

अक्ष-स्रक-परशुं गदेषु-कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकाम्,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म-जलजं घण्टां सुरा-भाजनम् ।
शूलं पाश-सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननाम्,
सेवे सैरिभ-मर्दिनीमिह महा-लक्ष्मीं सरोज-स्थिताम् ।।२

घण्टा-शूल-हलानि शङ्ख-मुसले चक्रं धनुः सायकम्,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त-विलसच्छीतांशु-तुल्य-प्रभाम् ।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रि-जगतामाधार-भूतां महा—
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम् ।।३

मानस-पूजन

१ ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीतये समर्पयामि नमः ।
२ ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीतये समर्पयामि नमः ।
३ ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीतये घ्रापयामि नमः ।
४ ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीजगदम्बा-दुर्गा - प्रीतये दर्शयामि नमः ।
५ ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीतये निवेदयामि नमः ।
६ ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीतये समर्पयामि नमः ।

मूल-पाठ

यच्च किञ्चित् क्वचिद्-वस्तु, सदसद् वाऽखिलात्मिके !
तस्य सर्वस्य या शक्तिः, सा त्वं किं स्तूयसे तदा ।।१

सम्मानिता ननादोच्चैः, साट्टहासं मुहुर्मुहुः ।
तस्या नादेन घोरेण, कृत्स्नमापूरितं नभः ।।२

अर्ध-निष्क्रान्त एवासौ, युध्यमानो महाऽसुरः ।
तया महाऽसिना देव्या, शिरश्छित्वा निपातितः ।।३

दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि ।

दारिद्रय-दुःख-भय-हारिणि ! का त्वदन्या,
सर्वोपकार - करणाय सदाऽऽर्द्र - चित्ता ॥४

यो मां जयति संग्रामे, यो मे दर्पं व्यपोहति ।
यो मे प्रति-बलो लोके, स मे भर्ता भविष्यति ॥५

इत्युक्त्वा सोऽभ्यधावत् तामसुरो धूम्र - लोचनः ।
हुंकारेणैव तं भस्म, सा चकाराम्बिका ततः ॥६

भ्रुकुटी-कुटिलात् तस्याः, ललाट-फलकाद् द्रुतम् ।
काली कराल-वदना, विनिष्क्रान्ताऽसि-पाशिनी ॥७

ब्रह्मेश-गुह - विष्णूनां, तथेन्द्रस्य च शक्तयः ।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य, तद् - रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥८

तस्य निष्क्रामतो देवी, प्रहस्य स्वनवत् ततः ।
शिरश्चिच्छेद खड्गेन, ततोऽसावपतद् भुवि ॥९

एकैवाऽहं जगत्यत्र, द्वितीया का ममापरा ?
पश्यैता दुष्ट ! मय्येव, विशन्त्यो मद्-विभूतयः ॥१०

सर्व-स्वरूपे ! सर्वेशे ! सर्व-शक्ति - समन्विते !
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि ! दुर्गे देवि ! नमोऽस्तु ते ॥११

मधु - कैटभ - नाशं च, महिषासुर - घातनम् ।
कीर्तयिष्यन्ति ये तद्-वद्, वधं शुम्भ-निशुम्भयोः ॥१२

यत् प्रार्थ्यते त्वया भूप ! त्वया च कुल-नन्दन !
मत्तस्तत् प्राप्यतां सर्वं, परितुष्टा ददामि तत् ॥१३

फल-श्रुति

त्रिकालं यस्तु कामाक्षीं, पठेदेकान्त - चेतसा ।
स्वेष्टं सर्वं च प्राप्नोति, प्रसादेनाम्बया ध्रुवम् ॥
सम्पुटितं च कृत्वा यः, पठेत् सप्तशतीं नरः ।
स प्राप्य मानसी-सिद्धि, भक्तः सौख्यं समश्नुते ॥
यश्च धारयते दिव्यं, यन्त्रं कृत्वा विधानतः ।
आधयस्तस्य नश्यन्ति, व्याधयश्चाप्यपोहते ॥
भूत-प्रेत - भयो नास्ति, शत्रु - शस्त्र - भयो नहि ।
डाकिनी-शाकिनी-नाशः, भवत्यम्बाऽनुकम्पया ॥
यश्चानुष्ठीयते प्रेम्णा, देवीं दुर्गामिमां नरः ।
सर्व-काम्यं स प्राप्नोति, ध्रुवं दुर्गाऽनुकम्पया ॥
सन्तति धन-धान्यं च, पाठ - मात्रेण केवलम् ।
सौभाग्यं राज-सम्मानं, लभतेऽहर्निशं ध्रुवम् ॥

क्षमा-प्रार्थना

ॐ यदक्षरं परिभ्रष्टं, मात्रा-हीनं तु यद् भवेत्!
तत् सर्वं क्षम्यतां देवि! प्रसीद परमेश्वरि!॥

पाठ-समर्पण

ॐ गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
सिद्धिर्मे भवतु देवि! त्वत् - प्रसादान्महेश्वरि!॥

'अनुभूत साधना' (३)

'मूल सप्तशती' साधना

॥ ॐ श्रीदेव्युवाच ॥

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ ! मधु यावत् पिबाम्यहम् ।
मया त्वयि हतेऽत्रैव, गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥१
म्रियतां त्रिदशाः सर्वे, यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥२

॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥

साऽब्रवीत् तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः स्तूयतेऽत्र का ?
शरीर-कोशतश्चास्याः, समुद्भूताऽब्रवीच्छिवा ॥३
स्तोत्रं ममैतत् क्रियते, शुम्भ-दैत्य-निराकृतैः ।
देवैः समस्तैः समरे, निशुम्भेन पराजितैः ॥४
शरीर-कोशाद् यत् तस्याः, पार्वत्याः निःसृताऽम्बिका ।
कौशिकीति समस्तेषु, ततो लोकेषु गीयते ॥५
तस्यां विनिर्गतायां तु, कृष्णाऽभूत् साऽपि पार्वती ।
कालिकेति समाख्याता, हिमाचल - कृताश्रया ॥६

॥ ॐ श्रीदेव्युवाच ॥

सत्य-मुक्तं त्वया नात्र, मिथ्या किञ्चिद् त्वयोदितम् ।
त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो, निशुम्भश्चापि तादृशः ॥७
किन्त्वत्र यत् प्रतिज्ञातं, मिथ्या तत् क्रियते कथम् ।
श्रूयतामल्प-बुद्धित्वात्, प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥८
यो मां जयति संग्रामे, यो मे दर्पं व्यपोहति ।
यो मे प्रति-बलो लोके, स मे भर्त्ता भविष्यति ॥९
तदाऽऽगच्छतु शुम्भोऽत्र, निशुम्भो वा महाऽसुरः ।
मां जित्वा किं चिरेणात्र, पाणिं गृह्णातु मे लघु ॥१०
एवमेतद् बली शुम्भो, निशुम्भश्चाति-वीर्य-वान् ।
किं करोमि प्रतिज्ञा मे, यदनालोचिता पुरा ॥११
स त्वं गच्छ मयोक्तं ते, यदेतत् सर्वमादृतः ।
तदाचक्ष्वाऽसुरेन्द्राय, स च युक्तं करोतु तत् ॥१२
दैत्येश्वरेण प्रहितो, बल - वान् बल - सम्वृतः ।
बलान्नयसि मामेवं, ततः किं ते करोम्यहम् ॥१३

॥ ॐ ऋषिरुवाच ॥

उवाच कालीं कल्याणी, ललितं चण्डिका वचः ॥१४
यस्माच्चण्डं च मुण्डं च, गृहीत्वा त्वमुपागता ।
चामुण्डेति ततो लोके, ख्याता देवि ! भविष्यसि ॥१५
सा चाह धूम्र - जटिलमोशानमपराजिता ।
दूत ! त्वं गच्छ भगवन् ! पार्श्वं शुम्भ-निशुम्भयोः ॥१६
ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च, दानवावति - गर्वितौ ।
ये चान्ये दानवास्तत्र, युद्धाय समुपस्थिताः ॥१७
त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां, देवाः सन्तु हविर्भुजः ।
यूयं प्रयात पातालं, यदि जीवितुमिच्छथ ॥१८
बलावलेपादथ चेद्, भवन्तो युद्ध - कांक्षिणः ।
तदागच्छत तृप्यन्तु, मच्छिवाः पिशितेन वः ॥१९
यतो नियुक्तो दौत्येन, तया देव्या शिवः स्वयम् ।
शिव-दूतीति लोकेऽस्मिन्, ततः सा ख्यातिमागता ॥२०
तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा, चण्डिका प्राह सत्वरा ।
उवाच कालीं चामुण्डे, विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥२१
मच्छस्त्र-पात-सम्भूतान्, रक्त-विन्दून् महाऽसुरान् ।
रक्त-विन्दोः प्रतीच्छ त्वं, वक्त्रेणानेन वेगिना ॥२२
भक्षयन्ती चर रणे, तदुत्पन्नान् महाऽसुरान् ।
एवमेष क्षयं दैत्यः, क्षीण - रक्तो गमिष्यति ॥२३
भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा, न चोत्पत्स्यन्ति चापरे ॥२४

॥ ॐ श्रीदेव्युवाच ॥

एकैवाहं जगत्यत्र, द्वितीया का ममापरा ?
पश्यैता दुष्ट ! मय्येव, विशन्त्यो मद्-विभूतयः ॥२५
अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदा स्थिता ।
तत्-संहृतं मयैकैव, तिष्ठाम्याजौ स्थिरो भव ॥२६
वरदाऽहं सुर - गणाः ! वरं यं मनसेच्छथ ।
तं वृणुध्वं प्रयच्छामि, जगतामुप - कारकम् ॥२७
वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते, अष्टा-विंशतिमे युगे ।
शुम्भो निशुम्भश्चैवान्यावुत्पत्स्येते महाऽसुरौ ॥२८

नन्द-गोप-गृहे जाता, यशोदा - गर्भ - सम्भवा ।
ततस्तौ नाशयिष्यामि, विन्ध्याचल-निवासिनी ।।२९

पुनरप्यति - रौद्रेण, रूपेण पृथिवी - तले ।
अवतीर्य हनिष्यामि, वैप्रचित्तांश्च दानवान् ।।३०

भक्षयन्त्याश्च तानुग्रान्, वैप्रचित्तान् महाऽसुरान् ।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति, दाडिमी-कुसुमोपमाः ।।३१

ततो मां देवताः स्वर्गे, मर्त्य-लोके च मानवाः ।
स्तुवन्तो व्याहरिष्यन्ति, सततं रक्त-दन्तिकाम् ।।३२

भूयश्च शत - वार्षिक्यामनावृष्टयामनम्भसि ।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ, सम्भविष्याम्ययोनिजा ।।३३

ततः शतेन नेत्राणां, निरीक्षिष्यामि यन्मुनीम् ।
कीर्त्तयिष्यन्ति मनुजाः, शताक्षीमिति मां ततः ।।३४

ततोऽहमखिलं लोकमात्म-देह - समुद्भवैः ।
भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राण - धारकैः ।।३५

शाकम्भरीति विख्यातिं, तदा यास्याम्यहं भुवि ।
तत्रैव च वधिष्यामि, दुर्गमाख्यं महाऽसुरम् ।।३६

दुर्गा देवीति विख्यातं, तन्मे नाम भविष्यति ।
पुनश्चाहं यदा भीमं, रूपं कृत्वा हिमाचले ।।३७

रक्षांसि भक्षयिष्यामि, मुनीनां त्राण-कारणात् ।
तदा मां मुनयः सर्वे, स्तोष्यन्त्यानम्र - मूर्तयः ।।३८

भीमा-देवीति विख्यातं, तन्मे नाम भविष्यति ।
यदाऽरुणाख्यस्त्रैलोक्ये, महा-बाधां करिष्यति ।।३९

तदाऽहं भ्रामरं रूपं, कृत्वाऽसंख्येय- षट् - पदम् ।
त्रैलोक्यस्य हितार्थाय, वधिष्यामि महाऽसुरम् ।।४०

भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः ।।४१

इत्थं यदा यदा बाधा, दानवोत्था भविष्यति ।
तदा तदाऽवतीर्याऽहं, करिष्याम्यरि - संक्षयम् ।।४२

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं, स्तोष्यते यः समाहितः ।
तस्याहं सकलां बाधां, शमयिष्याम्यसंशयम् ।।४३

मधु - कैटभ - नाशं च, महिषासुर - घातनम् ।
कीर्त्तयिष्यन्ति ये तद्-वद्, वधं शुम्भ-निशुम्भयोः ॥४४
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां, नवम्यां चैक - चेतसः ।
श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या, मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥४५
न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद्, दुष्कृतोत्था न चापदः ।
भविष्यति न दारिद्र्यं, न चैवेष्ट - वियोजनम् ॥४६
शत्रुतो न भयं तस्य, दस्युतो वा न राजतः ।
न शस्त्रानल-तोयौघात्, कदाचित् सम्भविष्यति ॥४७
तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं, पठितव्यं समाहितैः ।
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या, परं स्वस्त्ययनं हि तत् ॥४८
उपसर्गानशेषांस्तु, महा - मारी - समुद्भवान् ।
तथा त्रिविधमुत्पातं, माहात्म्यं शमयेन्मम ॥४९
यत्रैतत् पठ्यते सम्यङ्, नित्यमायतने मम ।
सदा न तद् विमोक्ष्यामि, सान्निध्यं तत्र मे स्थितम् ॥५०
बलि - प्रदाने पूजायामग्नि - कार्ये महोत्सवे ।
सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च ॥५१
जानताऽजानता वापि, बलि-पूजां तथा कृताम् ।
प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या, वह्नि-होमं तथा कृतम् ॥५२
शरत्-काले महा-पूजा, क्रियते या च वार्षिकी ।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं, श्रुत्वा भक्ति-समन्वितः ॥५३
सर्व-बाधा-विनिर्मुक्तो, धन - धान्य - समन्वितः ।
मनुष्यो मत् - प्रसादेन, भविष्यति न संशयः ॥५४
श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं, तथा चोत्पत्तयः शुभाः ।
पराक्रमं च युद्धेषु, जायते निर्भयः पुमान् ॥५५
रिपवः संक्षयं यान्ति, कल्याणं चोप - पद्यते ।
नन्दते च कुलं पुंसां, माहात्म्यं मम श्रृण्वताम् ॥५६
शान्ति- कर्मणि सर्वत्र, तथा दुःस्वप्न-दर्शने ।
ग्रह-पीडासु चोग्रासु, माहात्म्यं श्रृणुयान्मम ॥५७
उप-सर्गाः शमं यान्ति, ग्रह-पीडाश्च दारुणाः ।
दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं, सु - स्वप्नमुप - जायते ॥५८

बाल-ग्रहाभि-भूतानां, बालानां शान्ति-कारकम् ।
सङ्घात-भेदे च नृणां, मैत्री - करणमुत्तमम् ॥५९
दुर्वृत्तानामशेषाणां, बल - हानि - करं परम् ।
रक्षो - भूत - पिशाचानां, पठनादेव नाशनम् ॥६०
सर्वं ममैतन्माहात्म्यं, मम सन्निधि - कारकम् ।
पशु-पुष्पार्घ्य - धूपैश्च, गन्ध - दीपैस्तथोत्तमैः ॥६१
विप्राणां भोजनैर्होमैः, प्रोक्षणीयैरहर्निशम् ।
अन्यैश्च विविधैर्भोगैः, प्रदानैर्वत्सरेण या ॥६२
प्रीतिर्मे क्रियते साऽस्मिन्, सकृत् सुचरिते श्रुते ।
श्रुतं हरति पापानि, तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति ॥६३
रक्षां करोति भूतेभ्यो, जन्मनां कीर्तनं मम ।
युद्धेषु चरितं यन्मे, दुष्ट - दैत्य - निबर्हणम् ॥६४
तस्मिञ्छ्रुते वैरि-कृतं, भयं पुंसां न जायते ।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च, याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृता ॥६५
ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु, प्रयच्छन्ति शुभां मतिम् ।
अरण्ये प्रान्तरे वापि, दावाग्नि-परि - वारितः ॥६६
दस्युभिर्वा वृतः शून्ये, गृहीतो वापि शत्रुभिः ।
सिंह-व्याघ्रानुयातो वा, वने वा वन-हस्तिभिः ॥६७
राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो, वध्यो बन्ध-गतोऽपि वा ।
आघूर्णितो वा वातेन, स्थितः पोते महार्णवे ॥६८
पतत्सु चापि शस्त्रेषु, सङ्ग्रामे भृश-दारुणे ।
सर्व-बाधासु घोरासु, वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा ॥६९
स्मरन् ममैतच्चरितं, नरो मुच्येत सङ्कटात् ॥७०
मम प्रभावात् सिंहाद्या, दस्यवो वैरिणस्तथा ।
दूरादेव पलायन्ते, स्मरतश्चरितं मम ॥७१
यत् प्रार्थ्यते त्वया भूप ! त्वया च कुल-नन्दन !
मत्तस्तत् प्राप्यतां सर्वं, परि-तुष्टा ददामि तत् ॥७२
स्वल्पैरहोभिर्नृपते ! स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ।
हत्वा रिपूनस्खलितं, तव तत्र भविष्यति ॥७३

मृतश्च भूयः सम्प्राप्य, जन्म देवाद् विवस्वतः ।
सावर्णिको मनुर्नाम, भवान् भुवि भविष्यति ।।७४
वैश्य-वर्य ! त्वया यश्च, वरोऽस्मत्तोऽभि-वाञ्छितः ।
तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै, तव ज्ञानं भविष्यति ।।७५

।।ॐ ऋषिरुवाच ।।

मूल-दुर्गामिमां नित्यं, पठेद् यः सु - समाहितः ।
इह-लोके सुखं भुक्त्वा, देवी-सान्निध्यमाप्नुयात् ।।७६

क्षमा-प्रार्थना

आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि, क्षम्यतां परमेश्वरि !
मन्त्र-हीनं, क्रिया-हीनं, भक्ति-हीनं सुरेश्वरि !
यत् - पूजितं मया देवि ! परिपूर्णं तदस्तु मे ।
अज्ञानाद् विस्मृतेर्भ्रान्त्या, यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तत्-सर्वं क्षम्यतां दवि ! प्रसीद परमेश्वरि !
कामेश्वरि ! जगन्मातः ! सच्चिदानन्द-विग्रहे !
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या, प्रसीद परमेश्वरि !

पाठ-समर्पण

ॐ गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं, गुहाणास्मत् कृतं जपम् ।
सिद्धिर्मे भवतु देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि! ।।

'अनुभूत साधना' (४)

'गुप्त सप्तशती' साधना

['**गुप्त सप्तशती**' श्रीमान् वावा मोतीलाल जी महाराज का एक महत्त्व-पूर्ण प्रसाद है। यह अलभ्य वस्तु उनकी शिष्य-मण्डली तक ही सीमित थी। **बाबाश्री** की कृपा से यह '**चण्डी**' पत्रिका द्वारा सर्व-साधारण के लाभ के लिए सर्व-प्रथम '**चण्डी' वर्ष १५, संवत् २०१३ वि०** में प्रकाशित हुई थी। पाठकों की माँग पर यह दुवारा '**चण्डी' वर्ष ५०** में प्रकाशित हुई। अव पुनः माँग पर इसे ज्यों-का-त्यों यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

सात सौ मन्त्रों की '**श्री दुर्गा सप्तशती**' का पाठ करने से साधकों का जैसा कल्याण होता है, वैसा-ही कल्याणकारी इसका पाठ है। यह '**गुप्त सप्तशती**' प्रचुर मन्त्र-बीजों के होने से आत्म-कल्याणेच्छु साधकों के लिए अमोघ फल-प्रद है।

इसके '**पाठ**' का क्रम इस प्रकार है प्रारम्भ में '**कुञ्जिका-स्तोत्र**', उसके बाद '**गुप्त सप्तशती**', तदनन्तर '**स्तवन**' का पाठ करें।— सं०]

कुञ्जिका-स्तोत्र

॥पूर्व-पीठिका— ईश्वर उवाच॥

श्रृणु देवि ! प्रवक्ष्यामि कुञ्जिका - मन्त्रमुत्तमम् ।
येन मन्त्र - प्रभावेन चण्डी - जपं शुभं भवेत् ॥
न वर्म नार्गला - स्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ।
न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासं च न चार्चनम् ॥
कुञ्जिका-पाठ - मात्रेण दुर्गा - पाठ - फलं लभेत् ।
अति - गुह्य-तमं देवि ! देवानामपि दुर्लभम् ॥
गोपनीयं प्रयत्नेन स्व-योनि-वचच पार्वति !
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।
पाठ - मात्रेण संसिद्धिः कुञ्जिका - मन्त्रमुत्तमम् ॥

॥ मन्त्र ॥

ॐ श्लैं ह्रुँ क्लीं क्लौं जुं सः ज्वलयोज्ज्वल ज्वल प्रज्वल - प्रज्वल प्रबल-प्रबल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ।

इस 'कुञ्जिका-मन्त्र' का यहाँ दस वार जप करे। इसी प्रकार 'स्तव-पाठ' के अन्त में पुनः इस मन्त्र का दस वार जप कर 'कुञ्जिका स्तोत्र' का पाठ करे।

॥ कुञ्जिका स्तोत्र मूल-पाठ ॥

नमस्ते रुद्र - रूपायै, नमस्ते मधु - मर्दिनी।
नमस्ते कैटभारी च, नमस्ते महिषासनि॥
नमस्ते शुम्भ - हंत्रेति, निशुम्भासुर - घातिनी।
जाग्रतं हि महा - देवि! जप - सिद्धि कुरुष्व मे॥
ऐं-कारी सृष्टि-रूपायै, ह्रीं-कारी प्रति - पालिका।
क्लीं-कारी काल-रूपिण्यै, वीज - रूपा नमोऽस्तु ते॥
चामुण्डा चण्ड - घाती च, यैं-कारी वर - दायिनी।
विच्चे नोऽभयदा नित्यं, नमस्ते मन्त्र - रूपिणि॥
धां - धीं-धूं - धूर्जटेर्पत्नी, वां वीं वागेश्वरी तथा।
क्रां - क्रीं - श्रीं मे शुभं कुरु, ऐं ॐ ऐं रक्ष सर्वदा॥
ॐ ॐ ॐ-कार-रूपायै, ज्रां-ज्रां ज्रम्भाल-नादिनी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि! शां शीं शूं मे शुभं कुरु॥
ह्रूं ह्रूं ह्रूंकार-रूपिण्यै, ज्रं ज्रं-ज्रम्भाल-नादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे! भवानि! ते नमो नमः॥

॥ मन्त्रः ॥

ॐ अं कं चं टं तं पं यं शं बिन्दुराविर्भव, आविर्भव, हं सं लं क्षं मयि जाग्रय-जाग्रय, त्रोटय-त्रोटय दीप्तं कुरु-कुरु स्वाहा।

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा, खां खीं खूं खेचरी तथा।
म्लां म्लीं म्लूं दीव्यती पूर्णा, कुञ्जिकायै नमो नमः॥
सां सीं सप्तशती-सिद्धि, कुरुष्व जप - मात्रतः॥
इदं तु कुञ्जिका-स्तोत्रं, मन्त्र - जाल - ग्रहां प्रिये!
अभक्ते च न दातव्यं, गोपयेत् सर्वदा शृणु॥
कुञ्जिका - विहितं देवि! यस्तु सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धि, अरण्ये रुदनं यथा॥

गुप्त सप्तशती

ॐ ब्रीं - ब्रीं-ब्रीं वेणु - हस्ते, स्तुत-सुर-बटुकैर्ह्रीं गणेशस्य माता ।
स्वानन्दे नन्द - रूपे, अनहत - निरते, मुक्तिदे मुक्ति - मार्गे ।।
हंसः सोहं विशाले, वलय - गति - हसे, सिद्ध - देवी समस्ता ।
ह्रीं-ह्रीं-ह्रीं सिद्ध - लोके, कच - रुचि-विपुले, वीर - भद्रे नमस्ते ।।१

ॐ ह्रीङ्कारोच्चारयन्ती, मम हरति भयं, चण्ड - मुण्डौ प्रचण्डे ।
खां-खां-खां खड्ग - पाणे· ध्रक-ध्रक ध्रकिते, उग्र - रूपे स्वरूपे ।।
हुँ - हुँ हुङ्कार - नादे, गगन-भुवि-तले, व्यापिनी व्योम - रूपे ।
हं - हं हङ्कार - नादे, सुर - गण - नमिते, चण्ड - रूपे नमस्ते ।।२

ऐं लोके कीर्तयन्ती, मम हरतु भयं, राक्षसान् हन्यमाने ।
घ्रां-घ्रां-घ्रां घोर - रूपे, घघ - घघ - घटिते, घर्घरे घोर - रावे ।।
निर्मांसे काक-जङ्घे, घसित-नख - नखा, धूम्र - नेत्रे त्रि - नेत्रे ।
हस्ताब्जे शूल-मुण्डे, कुल - कुल ककुले, सिद्ध - हस्ते नमस्ते ।।३

ॐ क्रीं-क्रीं-क्रीं ऐं कुमारी, कुह - कुह - मखिले, कोकिलेनानुरागे ।
मुद्रा-संज्ञ-त्रि-रेखा, कुरु - कुरु सततं, श्री महा - मारि गुह्ये ।।
तेजाङ्गे सिद्धि - नाथे, मन-पवन - चले, नैव आज्ञा - निधाने ।
ऐङ्कारे रात्रि - मध्ये, स्वपित - पशु - जने, तत्र कान्ते नमस्ते ।।४

ॐ व्रां-व्रीं व्रूं व्रैं कवित्वे, दहन-पुर-गते रुक्मि - रूपेण चक्रे ।
त्रिः- शक्त्या, युक्त-वर्णादिक, कर - नमिते, दादिवं पूर्व - वर्णे ।।
ह्रीं-स्थाने काम-राजे, ज्वल-ज्वल ज्वलिते, कोशिनि कोश-पत्रे ।
स्वच्छन्दे कष्ट - नाशे, सुर-वर-वपुषे, गुह्य - मुण्डे नमस्ते ।।५

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोर-तुण्डे, घघ-घघ घघघे घर्घरान्याङ्घ्रि-घोषे ।
ह्रीं क्रीं द्रूं द्रोञ्च-चक्रे, रर - रर- रमिते, सर्व - ज्ञाने प्रधाने ।।
द्रीं तीर्थेषु च ज्येष्ठे, जुग - जुग जजुगे म्लीं पदे काल - मुण्डे ।
सर्वाङ्गे रक्त - धारा - मथन-कर-वरे, वज्र - दण्डे नमस्ते ।।६

ॐ क्रां क्रीं क्रूं वाम-नमिते, गगन गड-गडे गुह्य - योनि-स्वरूपे ।
वज्राङ्गे, वज्र - हस्ते, सुर-पति-वरदे, मत्त - मातङ्ग - रूढे ।।

स्वस्तेजे, शुद्ध - देहे, लल - लल-ललिते, छेदिते पाश - जाले ।
कुण्डल्याकार - रूपे, वृष वृषभ - ध्वजे, ऐन्द्रि मातर्नमस्ते ।।७
ॐ हुं-हुं हुङ्कार - नादे, विषमवश - करे, यक्ष - वैताल - नाथे ।
सु - सिद्धयर्थे सु - सिद्धेः, ठठ - ठठ-ठठठः, सर्व-भक्षे प्रचण्डे ।।
जूं सः सौं शान्ति - कर्मेऽमृत - मृत - हरे, निःसमेसं समुद्रे ।
देवि ! त्वं साधकानां, भव - भव वरदे, भद्र - काली नमस्ते ।।८
ब्रह्माणी वैष्णवी त्वं, त्वमसि बहुचरा, त्वं वराह - स्वरूपा ।
त्वं ऐन्द्री त्वं कुबेरी, त्वमसि च जननी, त्वं कुमारी महेन्द्री ।।
ऐं ह्रीं क्लींङ्कार-भूते, वितल-तल - तले, भू - तले स्वर्ग - मार्गे ।
पाताले शैल - शृङ्गे, हरि - हर - भुवने, सिद्ध-चण्डी नमस्ते ।।९
हं लं क्षं शौण्डि-रूपे, शमित भव - भये, सर्व-विघ्नान्त-विघ्ने ।
गां गीं गूं गैं षडङ्गे, गगन-गति-गते, सिद्धिदे सिद्ध - साध्ये ।।
वं क्रं मुद्रा हिमांशोर्प्रहसति - वदने, त्र्यक्षरे ह्सैं निनादे ।
हां हूं गां गीं गणेशी, गज - मुख - जननी, त्वां महेशीं नमामि ।।१०

स्तवन

या देवी खड्ग-हस्ता, सकल-जन-पदा, व्यापिनी विश्व-दुर्गा ।
श्यामाङ्गी शुक्ल-पाशाब्दि जगण-गणिता, ब्रह्म-देहार्ध - वासा ।।
ज्ञानानां साधयन्ती, तिमिर-विरहिता, ज्ञान - दिव्य - प्रबोधा ।
सा देवी, दिव्य - मूर्तिर्प्रदहतु दुरितं, मुण्ड - चण्डे प्रचण्डे ।।१
ॐ हां हीं हूं वर्म-युक्ते, शव-गमन - गतिर्भीषणे भीम - वक्त्रे ।
क्रां क्रीं क्रूं क्रोध-मूर्तिविकृत-स्तन-मुखे, रौद्र - दंष्ट्रा - कराले ।।
कं - कं कंकाल - धारी भ्रमसि, जगदिदं भक्षयन्ती ग्रसन्ती—
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं, मुण्ड - चण्डे प्रचण्डे ।।२
ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं रुद्र-रूपे, त्रिभुवन-नमिते, पाश - हस्ते त्रि-नेत्रे ।
रां रीं रूं रङ्ग - रंगे किले किलित रवा, शूल - हस्ते प्रचण्डे ।।
लां लीं लूं लम्ब-जिह्वे हसति, कह-कहा शुद्ध-घोराट्ट - हासैः ।
कंकाली काल - रात्रिः प्रदहतु दुरितं, मुण्ड - चण्डे प्रचण्डे ।।३

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोर-रूपे घघ - घघ - घटिते घर्घराराव घोरे ।
निर्मांसे शुष्क - जङ्घे पिबति नर-वसा धूम्र-धूम्रायमाने ॥
ॐ द्रां द्रीं द्रूं द्रावयन्ती, सकल-भुवि-तले, यक्ष - गन्धर्व-नागान् ।
क्षां क्षीं क्षूं क्षोभयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड - मुण्डे प्रचण्डे ॥४

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भद्र-काली, हरि-हर-नमिते, रुद्र - मूर्ते विकर्णे ।
चन्द्रादित्यौ च कर्णौ, शशि-मुकुट-शिरो वेष्ठितां केतु-मालाम् ॥
स्रक्-सर्व-चोरगेन्द्रा शशि-करण-निभा तारकाः हार - कण्ठे ।
सा देवी दिव्य - मूर्तिः, प्रदहतु दुरितं चण्ड - मुण्डे प्रचण्डे ॥५

ॐ खं-खं-खं खड्ग-हस्ते, वर-कनक-निभे सूर्य-कान्ति-स्वतेजा ।
विद्युज्ज्वालावलीनां, भव-निशित महा - कर्त्रिका दक्षिणेन ॥
वामे हस्ते कपालं, वर - विमल - सुरा - पूरितं धारयन्ती ।
सा देवी दिव्य - मूर्तिः प्रदहतु दुरितं चण्ड - मुण्डे प्रचण्डे ॥६

ॐ हुँ-हुँ फट् काल-रात्रीं पुर-सुर-मथनीं धूम्र - मारी कुमारी ।
ह्रां ह्रीं ह्रूं हन्ति दुष्टान् कलित किल-किला शब्द अट्टाट्टहासे ॥
हा-हा भूत - प्रभूते, किल-किलित - मुखा, कीलयन्ती ग्रसन्ती ।
हुंकारोच्चारयन्ती प्रदहतु दुरितं चण्ड - मुण्डे प्रचण्डे ॥७

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं कपालीं परिजन-सहिता चण्डि चामुण्ड - नित्ये ।
रं - रं रंकार - शब्दे शशि - कर - धवले काल - कूटे दुरन्ते ॥
हुँ - हुँ हुंकार - कारि सुर-गण-नमिते, काल - कारी विकारी ।
त्र्यैलोक्यं वश्य-कारी, प्रदहतु दुरितं मुण्ड - चण्डे प्रचण्डे ॥८

वन्दे दण्ड - प्रचण्डा डमरु - डिमि-डिमा, घण्ट टंकार - नादे ।
नृत्यन्ती ताण्डवैषा थथ-थइ विभवैर्निर्मला मन्त्र - माला ॥
रूक्षौ कुक्षौ वहन्ती, खर - खरिता रवा चार्चिनि प्रेत - माला ।
उच्चैस्तैश्चाट्टहासै, हह हसित रवा, चर्म - मुण्डा प्रचण्डे ॥९

ॐ त्वं ब्राह्मी त्वं च रौद्री स च शिखि-गमना त्वं च देवी कुमारी ।
त्वं चक्री चक्र-हासा घुर-घुरित रवा, त्वं वराह - स्वरूपा ॥

रौद्रे त्वं चर्म-मुण्डा सकल - भुवि - तले संस्थिते स्वर्ग - मार्गे ।
पाताले शैल - श्रृङ्गे हरि - हर - नमिते देवि चण्डी नमस्ते ॥१०

रक्ष त्वं मुण्ड - धारी गिरि - गुह - विवरे निर्झरे पर्वते वा ।
संग्रामे शत्रु - मध्ये विश विषम - विषे संकटे कुत्सिते वा ॥

व्याघ्रे चौरे च सर्पेऽप्युदधि - भुवि-तले वह्नि - मध्ये च दुर्गे ।
रक्षेत् सा दिव्य - मूर्तिः प्रदहतु दुरितं मुण्ड - चण्डे प्रचण्डे ॥११

इत्येवं बीज-मन्त्रैः स्तवनमति - शिवं पातक - व्याधि - नाशम् ।
प्रत्यक्षं दिव्य - रूपं ग्रह - गण - मथनं मर्दनं शाकिनीनाम् ॥

इत्येवं वेद - वेद्यं सकल - भय - हरं मन्त्र - शक्तिश्च नित्यम् ।
मन्त्राणां स्तोत्रकं यः पठति स लभते प्रार्थितां मन्त्र - सिद्धिम् ॥१२

चं-चं-चं चन्द्र - हासा चचम चम-चमा चातुरी चित्त - केशी ।
यं-यं-यं योग - माया जननि जग-हिता योगिनी योग - रूपा ॥
डं-डं-डं डाकिनीनां डमरुक - सहिता दोल हिण्डोल डिम्भा ।
रं-रं-रं रक्त - वस्त्रा सरसिज - नयना पातु मां देवि दुर्गा ॥१३

श्री दुर्गायै नमः

प्रति-दिन जो व्यक्ति एक सौ आठ बार या एक हजार आठ बार **'दुर्गा'**-नाम (**दुर्गे दुर्गे**) का स्मरण करता है, वह धनी, पुत्रवान, सुखी और चिरायु होता है। जो नियम-पूर्वक प्रति-दिन **'दुर्गा'**-नाम का १००८ बार **जप** करता है, माँ के चरणों में प्रीति रखता है, तो यदि उसे धन की इच्छा है तो वह धनवान, ज्ञानार्थी है तो ज्ञानवान होता है और रोग से व्याकुल है तो शीघ्र ही रोग से छुटकारा पा जाता है।

यदि बन्धन में है, तो बन्धन से मुक्त होता है। भय से पीड़ित व्यक्ति भय से छुटकारा पाता है। पापी व्यक्ति पापों से मुक्त होता है। पुत्र-हीन व्यक्ति को पुत्र-लाभ होता है।

उक्त **'दुर्गा'**-नाम माहात्म्य में किञ्चित् भी सन्देह का स्थान नहीं है। **'दुर्गा'**- नाम-जप का जो भी फल बताया गया है, वह निश्चय ही सर्वथा सत्य है।

(यामल तन्त्र)

'अनुभूत साधना' (५)

'श्रीगर्भ-चण्डी' साधना

॥अर्थ गर्भ-कवचम्॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः शूलेन पाहि नो देवि! पाहि खड्गेन चाम्बिके!
घण्टा-स्वनेन नः पाहि, चाप-ज्या-निःस्वनेन च॥ मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ॥१

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च, चण्डिके! रक्ष दक्षिणे।
भ्रामेणनात्म - शूलस्य, उत्तरस्यां तथेश्वरि!॥ मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ॥२

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः सौम्यानि यानि रूपाणि, त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ-घोराणि, तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्॥ मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ॥३

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः खड्ग-शूल-गदादीनि, यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके!
कर - पल्लव-सङ्गीनि, तैरस्मान् रक्ष सर्वतः॥ मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ॥४

॥अथ गर्भ-अर्गला॥

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः ॐ एतत् ते वदनं सौम्यं, लोचन-त्रय-भूषितम्।
पातु नः सर्व-भूतेभ्यः, कात्यायनि! नमोऽस्तु ते॥ मः न च्चेवि यैडामुंचा क्लीं ह्रीं ऐं ॐ॥१

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः ज्वाला - कराल - मृत्युग्रमशेषासुर-सूदनम्।
त्रि-शूलं पातु नो भीतेर्भद्र-कालि! नमोऽस्तु ते॥ मः न च्चेवि यैडामुंचा क्लीं ह्रीं ऐं ॐ॥२

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः हिनस्ति दैत्य-तेजांसि, स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि! पापेभ्यो नः सुतानिव॥ मः न च्चेवि यैडामुंचा क्लीं ह्रीं ऐं ॐ॥३

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः असुरासृग् - वसा-पङ्क-चर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु, चण्डिके! त्वां नता वयम्॥ मः न च्चेवि यैडामुंचा क्लीं ह्रीं ऐं ॐ॥४

॥अथ गर्भ-शाप-विमोचनमुत्कीलनं च॥

नमश्चण्डिकायै। मूल-मन्त्रेण विन्यस्य, ध्यात्वा, मानसोपचारैः सम्पूज्य, मूल-मन्त्रं (**ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे क्लीं ह्रीं ऐं ॐ नमः स्वाहा**) यथा-शक्ति प्रजप्य, समर्प्य, उत्कीलनं कुर्यात्। यथा —

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं चण्डि! सकल-मन्त्राणां शाप-विमोचनं कुरु कुरु स्वाहा। (त्रि-वारं जपेत्)

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं चण्डि! सप्त-शतिके! सर्व-मन्त्राणां उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा। (त्रि-वारं जपेत्)

।।गर्भ-रात्रि-सूक्तम्।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः ब्रह्मोवाच मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ।।१

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि, वषट्-कारः स्वरात्मिका।
सुधा त्वमक्षरे! नित्ये! त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता।। मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ।।२

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः अर्द्ध - मात्रा - स्थिता नित्या, यानुच्चार्या विशेषतः।
त्वमेव सन्ध्या सावित्री, त्वं देवि! जननी परा।। मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ।।३

।।अथ गर्भ-चण्डी।।

।।विनियोग।।

ॐ अस्य श्रीगर्भ-चण्डी-माला-मन्त्रस्य ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरादि ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि। श्रीशक्ति-स्वरूपिणी महा-चण्डी देवता। ऐं वीजं। क्लीं शक्तिः। ह्रीं कीलकं। मम चतुर्विध-पुरुषार्थ-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

।।ऋष्यादि-न्यास।।

ॐ अस्य श्रीगर्भ-चण्डी-माला-मन्त्रस्य ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरादि-ऋषिभ्यो नमः शिरसि। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्-छन्दोभ्यो नमः मुखे। श्रीशक्ति-स्वरूपिणी-महा-चण्डी-देवतायै नमः हृदि। ऐं वीजाय नमः गुह्ये। क्लीं शक्तये नमः पादयोः। ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ। मम चतुर्विध-पुरुषार्थ-सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

षडङ्ग-न्यासः	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ॐ ह्रां	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ ह्रीं	तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ ह्रूं	मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ ह्रैं	अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुम्
ॐ ह्रौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्र-त्रयाय वौषट्
ॐ ह्रः	करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

।।ध्यानम्।।

शुद्ध-स्फटिक-सङ्काशां, रवि-बिम्बाननां शिवां। अनेक-शक्ति-संयुक्तां, सिंह-पृष्ठे निषेदुषीम्।।
अंकुशं चाक्ष-सूत्रं च, पाश-पुस्तक-धारिणीं। मुक्ता-हार-समायुक्तां, चण्डीं ध्याये चतुर्भुजाम्।।
सितेन दर्पणाब्जेन, वस्त्रालङ्कार-भूषितां। कलाप-जटा-संयुक्तां, सु-स्तनीं चन्द्र-शेखराम्।।
कटकैः स्वर्ण-रत्नाढ्यैर्महा-वलय-शोभितां। कम्बु-कण्ठीं सु-ताम्रोष्ठीं, सर्प-नूपुर-धारिणीम्।।
केयूर-मेखलाद्यैश्च, द्योतयन्तीं जगत्-त्रयम्। एवं ध्याये महा-चण्डीं, सर्व-कामार्थ-सिद्धिदाम्।।

।।अथ चतुष्टय-मुद्रा-प्रदर्शनम्।।

१ पाश, २ अंकुश, ३ अक्ष-सूत्र, ४ पुस्तक-मुद्राणि प्रदर्शयेत्

।।श्रीगर्भ-चण्डी मूल-पाठ।।

।।ॐ नमश्चण्डिकायै।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः ब्रह्मोवाच मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ।।१

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नमः यच्च किञ्चित् क्वचिद् वस्तु, सदसद् वाऽखिलात्मिके!
तस्य सर्वस्य या शक्तिः, सा त्वं किं स्तूयसे तदा।। मः न क्लीं ह्रीं ऐं ॐ।।२

ॐ श्रीं नमः सम्मानिता ननादोच्चैः, साट्ट - हासं मुहुर्मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण, कृत्स्नमापूरितं नभः।। मः न श्रीं ॐ।।३

ॐ श्रीं नमः अर्द्ध - निष्क्रान्त एवासौ, युध्य-मानो महाऽसुरः।
तया महाऽसिना देव्या, शिरश्छित्वा निपातितः।। मः न श्रीं ॐ।।४

ॐ श्रीं नमः दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष - जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव - शुभां ददासि।
दारिद्र्य - दुःख - भय - हारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकार - करणाय सदाऽऽर्द्र - चित्ता।। मः न श्रीं ॐ।।५

ॐ क्लीं नमः इन्द्रियाणामधिष्ठात्री, भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै, व्याप्ति-देव्यै नमो नमः।। मः न क्लीं ॐ।।६

ॐ क्लीं नमः इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्, तामसुरो धूम्र-लोचनः।
हुङ्कारेणैव तं भस्म, सा चकाराम्बिका ततः।। मः न क्लीं ॐ।।७

ॐ क्लीं नमः भ्रूकुटी-कुटिलात् तस्याः, ललाट-फलकाद् द्रुतम्।
काली कराल-वदना, विनिष्क्रान्ताऽसि-पाशिनी।। मः न क्लीं ॐ।।८

ॐ क्लीं नमः ब्रह्मेश - गुह - विष्णूनां, तथेन्द्रस्य च शक्तयः।
शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य, तद्-रूपैश्चण्डिकां ययुः।। मः न क्लीं ॐ।।९

ॐ क्लीं नमः अट्टाट्ट - हासमशिवं, शिव - दूती चकार ह।
तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः, शुम्भः कोपं परं ययौ।। मः न क्लीं ॐ।।१०

ॐ क्लीं नमः एकैवाहं जगत्यत्र, द्वितीया का ममापरा?
पश्यैता दुष्ट! मय्येव, विशन्त्यो मद्-विभूतयः।। मः न क्लीं ॐ।।११

ॐ क्लीं नमः सर्व - स्वरूपे सर्वेशे! सर्व - शक्ति-समन्विते!
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते।। मः न क्लीं ॐ।।१२

ॐ क्लीं नमः देव्युवाच मः न क्लीं ॐ।।१३

ॐ क्लीं नमः सर्वा-बाधा-विनिर्मुक्तो, धन-धान्य-सुतान्वितः।
मनुष्यो मत्-प्रसादेन, भविष्यति न संशयः।। मः न क्लीं ॐ।।१४

ॐ क्लीं नमः यत् प्रार्थ्यते त्वया भूप! त्वया च कुल-नन्दन!
मत्तस्तत् प्राप्यतां सर्वं, परितुष्टा ददामि तत्।। मः न क्लीं ॐ।।१५

।।जय जय श्रीमार्कण्डेय-पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सत्याः सन्तु मनसः कामाः।।

।।गर्भ-देवी-सूक्तम्।।

ॐ क्लीं नमः नमो देव्यै महा - देव्यै, शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै, नियताः प्रणतः स्म ताम्।। मः न क्लीं ॐ।।१

ॐ क्लीं नमः रौद्रायै नमो नित्यायै, गौर्य्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दु-रूपिण्यै, सुखायै सततं नमः।। मः न क्लीं ॐ।।२

ॐ क्लीं नमः कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै, सिद्ध्यै कूर्म्यै नमो नमः।
नैर्ऋते भूभृतां लक्ष्म्यै, शर्वाण्यै ते नमो नमः।। मः न क्लीं ॐ।।३

ॐ क्लीं नमः दुर्गायै दुर्ग - पारायै, सारायै सर्व - कारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै, धूम्रायै सततं नमः।। मः न क्लीं ॐ।।४

ॐ क्लीं नमः अति - सौम्याति-रौद्रायै, नतास्तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्-प्रतिष्ठायै, देव्यै कृत्यै नमो नमः।। मः न क्लीं ॐ।।५

।।गर्भ-रहस्य-त्रयम्।।

ॐ ह्रीं नमः गुरूपदेश - विधिना, पूजनीया प्रयत्नतः।
मन्त्रोद्धार - प्रयत्नेन, ज्ञातव्या सा नृपात्मज!।। मः न ह्रीं ॐ।।१

ॐ श्रीं नमः प्रदक्षिणां नमस्कारान्, कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः।
क्षमापयेज्जगद्धात्रीं, मुहुर्मुहुरतन्द्रितः।। मः न श्रीं ॐ।।२

ॐ क्लीं नमः जगन्मातुश्चण्डिकाया, कीर्तिता कामधेनवः।
मेधां प्रज्ञां तथा श्रद्धां, धारणां कान्तिमेव च मः न क्लीं ॐ।।३

।।गर्भ-सूत्र-त्रय।।

ॐ ऐं नमः ब्रह्म सरस्वती - सूक्तं, लक्ष्मी-सूक्तं जनार्दनम् श्रीं ॐ।।
अस्य मन्त्रस्य लक्ष-जपं, तदा सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्—

श्रीं श्रीं श्रीं ॐ नमः

।।श्री गर्भ-चण्डी सम्पूर्णा।।

'अनुभूत साधना' (६)

'मन्त्रात्मक सप्त-श्लोकी दुर्गा' साधना

अथवा

मन्त्रात्मक सप्त-श्लोकी चण्डी' साधना

(१) 'ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि' — प्रथम मन्त्र

विनियोग— ॐ अस्य '**ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि**' इति सप्त-श्लोकी-चण्डी-प्रथम-मन्त्रस्य श्रीवशिष्ठ ऋषिः, श्रीआद्या-महा-काली देवता, स्त्रौं वीजं, कामाक्षा शक्तिः, श्रीत्रिपुर-सुन्दरी महा-विद्या, तमो गुणः, त्वक् ज्ञानेन्द्रियं, मोहो रसः, भगं कर्मेन्द्रियं, आश्चर्यं स्वरं, अग्निः तत्त्वं, अविद्या कला, स्त्रीं उत्कीलनं, योनिः मुद्रा मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थ श्रीजगदम्बा-योग-माया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्-वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-श्लोकी-चण्डी-प्रथम-मन्त्र-जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास— **श्रीवशिष्ठ-ऋषये नमः** सहस्रारे—शिरसि, **श्रीआद्या-महा-काली-देवतायै नमः** द्वादशारे—हृदि, **स्त्रौं-वीजाय नमः** षडारे—लिङ्गे, **कामाक्षा-शक्त्यै नमः** दशारे— नाभौ, **श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-महा-विद्यायै नमः** षोडशारे—कण्ठे, **तमो-गुणाय नमः** अन्तरारे—मनसि, **त्वक्-ज्ञानेन्द्रियाय नमः** ज्ञानेन्द्रिये, **मोह-रसाय नमः** चेतसि, **भग-कर्मेन्द्रियाय नमः** कर्मेन्द्रिये, **आश्चर्य-स्वराय नमः** कण्ठ-मूले, **अग्नि-तत्त्वाय नमः** चतुरारे—गुदे, **अविद्या-कलायै नमः** कर-तले, **स्त्रीं-उत्कीलनाय नमः** पादयोः, **योनि-मुद्रायै नमः** सर्वाङ्गे, **मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योग-माया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्-वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त - सप्त-श्लोकी-चण्डी-प्रथम - मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः** अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास—	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ॐ ऐं स्त्रौं	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
नमो नमः	**तर्जनीभ्यां स्वाहा**	**शिरसे स्वाहा**
ज्ञानिनामपि चेतांसि	**मध्यमाभ्यां वषट्**	**शिखायै वषट्**
देवी भगवती हि सा	**अनामाभ्यां हुं**	**कवचाय हुं**
बलादाकृष्य मोहाय	**कनिष्ठाभ्यां वौषट्**	**नेत्र-त्रयाय वौषट्**
महा-माया प्रयच्छति	**करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्**	**अस्त्राय फट्**

ध्यान—

मेघाङ्गीं शशि-शेखरां त्रि-नयनामानन्द-संवर्द्धिनीम्,
नग्नां वा नृ-कराम्बरां शव-शिवारूढाति-तीव्रा-रतिम्।
कालस्यावृत्त्यांकुशं प्रमथर्ती सव्ये ह्यभीतिं वरम्,
दक्षाधोर्ध्व-कराम्बुजे नर-शिरः खड्गं वहन्तीं भजे॥

मानस-पूजन—

१ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीआद्या-महाकाली-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधोमुख-कनिष्ठांगुष्ठ-मुद्रा)। **२ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीआद्या-महा-काली-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (अधोमुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **३ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीआद्या-महा-काली श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **४ रं वह्न्यात्मकं श्रीआद्या-महाकाली-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-मध्यमा-अंगुष्ठ मुद्रा)। **५ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीआद्या-महा-काली-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-अनामा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **६ शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीआद्या-महा-काली-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-सर्वांगुलि-मुद्रा)।

मन्त्र-जप—एक-सहस्रं (१०००) तदंशं वा।

ॐ ऐं स्त्रौं नमः ज्ञानिनामपि चेतांसि, देवी भगवती हि सा।
बलादाकृष्य मोहाय, महा-माया प्रयच्छति नमो स्त्रौं ऐं ॐ॥ १॥

जप-समर्पण—

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिर्मे भवतु देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि !॥

दशांश होम (१००), तर्पण (१०), मार्जन (१), कन्या (१) भोजनं च।

❀ ❀ ❀

(२) 'ॐ दुर्गे ! स्मृता हरसि, भीतिमशेष-जन्तोः'— द्वितीय मन्त्र

विनियोग— ॐ अस्य '**ॐ दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः**' इति सप्त-श्लोकी-चण्डी-द्वितीय-मन्त्रस्य श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्राः ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रीं वीजं, रूपिणी शक्तिः, श्रीभैरवी महा-विद्या, सतो गुणः, रसना ज्ञानेन्द्रियं, शान्तः रसः, योनिः कर्मेन्द्रियं, सौम्यः स्वरः, वायुः तत्त्वं, शान्तिः कला, ह्रीं उत्कीलनं, प्रणामः मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योग-माया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्-वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-श्लोकी-चण्डी-द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—श्रीप्रजापत्यग्नि-वाय्वादित्य-वृहस्पति-वरुणेन्द्र-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे— शिरसि, **श्रीमहा-सरस्वती देवतायै नमः** द्वादशारे—हृदि, **श्रीं-वीजाय नमः** षडारे—लिङ्गे, **रूपिणी-शक्त्यै नमः** दशारे—नाभौ, **श्रीभैरवी-महा-विद्यायै नमः** षोडशारे—कण्ठे, **सतो-गुणाय नमः** अन्तरारे—मनसि, **रसना-ज्ञानेन्द्रियाय नमः** ज्ञानेन्द्रिये, **शान्त-रसाय नमः** चेतसि, **योनि-कर्मेन्द्रियाय नमः** कर्मेन्द्रिये, **सौम्य-स्वराय नमः** कण्ठ-मूले, **वायु-तत्त्वाय नमः** गुदे—चतुरारे, **शान्ति-कलायै नमः** कर-तले, **ह्रीं उत्कीलनाय नमः** पादयोः, **प्रणाम-मुद्रायै नमः** सर्वाङ्गे, **मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योग-माया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्-वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-श्लोकी-चण्डी-द्वितीय-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः** अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास—	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ॐ ऐं श्रीं	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
नमो नमः	**तर्जनीभ्यां स्वाहा**	**शिरसे स्वाहा**
दुर्गे ! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः	**मध्यमाभ्यां वषट्**	**शिखायै वषट्**
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि	**अनामाभ्यां हुं**	**कवचाय हुं**
दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या	**कनिष्ठाभ्यां वौषट्**	**नेत्र-त्रयाय वौषट्**
सर्वोपकार-करणाय सदार्द्र-चित्ता	**करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्**	**अस्त्राय फट्**

ध्यान— **विद्युद्-दाम-सम-प्रभां मृग-पति-स्कन्ध-स्थितां भीषणाम्,**
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्र - गदाऽसि-खेट - विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्,
विभ्राणाम-नलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

मानस-पूजन— १ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधोमुख-कनिष्ठांगुष्ठ-मुद्रा)। **२ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (अधोमुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **३ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **४ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-मध्यमा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **५ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-अनामा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **६ शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहासरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि। (ऊर्ध्व-मुख-सर्वांगुलि-मुद्रा)।

मन्त्र-जप— एक-सहस्रं (१०००) तदंशं वा।

ॐ ऐं श्रीं नमः दुर्गे ! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव - शुभां ददासि।।

दारिद्र्य - दुःख - भय - हारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र-चित्ता नमो श्रीं ऐं ॐ॥ २॥

जप-समर्पण—

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्-कृतं जपम्।
सिद्धिर्मे भवतु देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि !॥

दशांश होम-तर्पण-मार्जन-कन्या-भोजनं च।

❀ ❀ ❀

(३) 'ॐ सर्व-मङ्गल-मङ्गल्ये'—तृतीय मन्त्र

विनियोग— ॐ अस्य '**ॐ सर्व-मङ्गल-मङ्गल्ये**' इति सप्त-श्लोकी-चण्डी-तृतीय-मन्त्रस्य वह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुराः ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मी देवता, स्क्लीं वीजं, निद्रा शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रजोगुण-प्रधाना त्रि-गुणाः, घ्राण-प्रधाना पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्तः रसः, कर-प्रधाना पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवनं स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि, पञ्च कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवनं मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योग-माया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्-वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-श्लोकी-चण्डी-तृतीय-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादि-सेन्द्र-सुर-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे-शिरसि, **श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः** द्वादशारे—हृदि, **स्क्लीं-वीजाय नमः** षडारे—लिङ्गे, **निद्रा-शक्त्यै नमः** दशारे नाभौ, **श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः** षोडशारे—कण्ठे, **रजोगुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः** अन्तरारे—मनसि, **घ्राण-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः** ज्ञानेन्द्रिये, **शान्त-रसाय नमः** चेतसि, **कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः** कर्मेन्द्रिये, **स्तवन-स्वराय नमः** कण्ठ-मूले, **पञ्च-तत्त्वेभ्यो नमः** गुदे—चतुरारे, **पञ्च-कलाभ्यो नमः** कर-तले, **ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः** पादयोः, **स्तवन-मुद्रायै नमः** सर्वाङ्गे, **मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योग-माया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्-वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-श्लोकी-चण्डी-तृतीय-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः** अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास—	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ॐ ऐं स्क्लीं	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
नमो नमः	**तर्जनीभ्यां स्वाहा**	**शिरसे स्वाहा**
सर्व-मङ्गल-मङ्गल्ये!	**मध्यमाभ्यां वषट्**	**शिखायै वषट्**
शिवे ! सर्वार्थ-साधिके!	**अनामिकाभ्यां हुं**	**कवचाय हुं**
शरण्ये त्र्यम्बके! गौरि!	**कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्**	**नेत्र-त्रयाय वौषट्**
नारायणि! नमोऽस्तु ते	**करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्**	**अस्त्राय फट्**

ध्यान— राजन्मत्त - मराल - मन्द - गमनां राजीव-पत्रेक्षणाम्,
राजीव-प्रभवादि-देव-मुकुटैः राजत् पदाम्भोरुहाम्।
राजीवायत-मन्द-मण्डित-कुचां राजाधि-राजेश्वरीम्,
श्रीकृष्णस्य हृदिस्थ-चक्र-वसितां ध्याये जगन्मातरम्॥

मानस-पूजन—१ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधोमुख-कनिष्ठांगुष्ठ-मुद्रा)। २ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधोमुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। ३ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। ४ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-मध्यमा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। ५ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-अनामा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। ६ शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-सर्वांगुलि-मुद्रा)।

मन्त्र-जप : एक-सहस्रं (१०००) तदंशं वा।

ॐ ऐं स्क्लीं नमः सर्व-मङ्गल - मङ्गल्ये ! शिवे ! सर्वार्थ - साधिके !
शरण्ये ! त्र्यम्बके ! गौरि ! नारायणि ! नमोऽस्तु ते नमो स्क्लीं ऐं ॐ ॥३

जप-समर्पण— गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत्-कृतं जपम् ।
सिद्धिर्मे भवतु देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि !।

दशांश होम-तर्पण-मार्जन-कन्या-भोजनं च।

(४) 'ॐ शरणागत-दीनार्त'—चतुर्थ मन्त्र

विनियोग—ॐ अस्य '**ॐ शरणागत-दीनार्त**' इति सप्त-श्लोकी-चण्डी-चतुर्थ-मन्त्रस्य श्री-वह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुराः ऋषयः, श्रीमहा-काली देवता, ग्लौं वीजं, श्रीछाया शक्तिः, श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याः, तमो-गुण-प्रधाना त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्तः रसः, कर-प्रधाना पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवनं स्वरः, पञ्च-तत्वानि, पञ्च-कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवनं मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योग-माया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्-वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-श्लोकी-चण्डी-चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यास—**श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादि-सेन्द्र-सुर-ऋषिभ्यो नमः** सहस्रारे—शिरसि, **श्री-महा-काली-देवतायै नमः** द्वादशारे—हृदि, **ग्लौं-वीजाय नमः** षडारे—लिङ्गे, **श्रीछाया-शक्त्यै नमः** दशारे—नाभौ, **श्रीकाल्यादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः** षोडशारे—कण्ठे, **तमो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः** अन्तरारे—मनसि,

श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः ज्ञानेन्द्रिये, **शान्त-रसाय नमः** चेतसि, **कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः** कर्मेन्द्रिये, **स्तवन-स्वराय नमः** कण्ठ-मूले, **पञ्च-तत्त्वेभ्यो नमः** गुदे—चतुरारे, **पञ्च-कलाभ्यो नमः** कर-तले, **ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः** पादयोः, **स्तवन-मुद्रायै नमः** सर्वाङ्गे, **मम-क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योग-माया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्-वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-श्लोकी-चण्डी-चतुर्थ-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः** अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास—	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ॐ ऐं ग्लौं	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
नमो नमः	**तर्जनीभ्यां स्वाहा**	**शिरसे स्वाहा**
शरणागत-दीनार्त	**मध्यमाभ्यां वषट्**	**शिखायै वषट्**
परित्राण-परायणे!	**अनामाभ्यां हुं**	**कवचाय हुं**
सर्वस्यार्ति-हरे देवि!	**कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्**	**नेत्र-त्रयाय वौषट्**
नारायणि! नमोऽस्तु ते	**करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्**	**अस्त्राय फट्**

ध्यान— **बालार्का बाल-रूपा च त्रिशूल-वर-धारिणी।**
माहेश्वरी-स्वरूपेण कालिकां प्रणमाम्यहम्॥

मानस-पूजन—१ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहा-काली-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधोमुख-कनिष्ठांगुष्ठ-मुद्रा)। **२ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहा-काली-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (अधोमुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **३ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहा-काली-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **४ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहा-काली-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-मध्यमा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **५ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-काली-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-अनामा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **६ शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-काली श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-सर्वांगुलि-मुद्रा)।

मन्त्र-जप—एक सहस्रं (१०००) तदंशं वा।

ॐ ऐं ग्लौं नमः शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे !
सर्वस्यार्ति-हरे देवि ! नारायणि! नमोऽस्तु ते नमो ग्लौं ऐं ॐ।।४।।

जप-समर्पण—

गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत्-कृतं जपम्।
सिद्धिर्मे भवतु देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि !।।

दशांश होम-तर्पण-मार्जन-कन्या-भोजनं च।

❀ ❀ ❀

(५) 'ॐ सर्व-स्वरूपे ! सर्वेशे' — पञ्चम मन्त्र

विनियोग—ॐ अस्य 'ॐ सर्व-स्वरूपे ! सर्वेशे' इति सप्त-श्लोकी-चण्डी-पञ्चम-मन्त्रस्य वह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुराः ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, श्रूं बीजं, श्रीतुष्टिः शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सतो-गुण-प्रधानाः त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधानाः पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्तः रसः, कर-प्रधाना पञ्च- कर्मेन्द्रियाणि, स्तवनं स्वरः, पञ्च-तत्वानि, पञ्च-कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवनं मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योग-माया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्-वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-श्लोकी-चण्डी-पञ्चम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—**श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादि-सेन्द्र-सुर-ऋषिभ्यो नमः** सहस्रारे—शिरसि, **श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः** द्वादशारे—हृदि, **श्रूं-बीजाय नमः** षडारे—लिङ्गे, **श्रीतुष्टि-शक्त्यै नमः** दशारे—नाभौ, **श्रीतारादि -दश-महा-विद्याभ्यो नमः** षोडशारे—कण्ठे, **सतो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः** अन्तरारे—मनसि, **श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः** ज्ञानेन्द्रिये, **शान्त-रसाय नमः** चेतसि, **कर-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः** कर्मेन्द्रिये, **स्तवन-स्वराय नमः** कण्ठ-मूले, **पञ्च-तत्त्वेभ्यो नमः** गुदे—चतुरारे, **पञ्च-कलाभ्यो नमः** कर-तले, **ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः** पादयोः, **स्तवन-मुद्रायै नमः** सर्वाङ्गे, **मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योग-माया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्-वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-श्लोकी-चण्डी-पञ्चम-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः** अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास—	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ॐ ऐं श्रूं	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
नमो नमः	**तर्जनीभ्यां स्वाहा**	**शिरसे स्वाहा**
सर्व-स्वरूपे, सर्वेशे !	**मध्यमाभ्यां वषट्**	**शिखायै वषट्**
सर्व-शक्ति-समन्विते !	**अनामाभ्यां हुं**	**कवचाय हुं**
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि !	**कनिष्ठाभ्यां वौषट्**	**नेत्र-त्रयाय वौषट्**
दुर्गे, देवि ! नमोऽस्तु ते	**करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्**	**अस्त्राय फट्**

ध्यान— **ब्रह्मा ब्रह्म - स्वरूपिणी जल - धरा हंसे सदा गामिनी,**
विद्या-वस्त्र-कमण्डलुः कर-जपा त्वक्षांशु-मन्मोहिनी।
भास्वन्मौक्तिक-जालिका-परिवृता लोक-त्रयाह्लादिनी,
शान्ता शान्त-स्वरूपिणी विजयते शान्ति करोत्येव नः॥

मानस -पूजन—**१ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहा-सरस्वती-पादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (अधोमुख-कनिष्ठांगुष्ठ-मुद्रा) । **२ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (अधोमुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा) । **३ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-

मुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **४ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-मध्यमा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **५ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-अनामा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **६ शं शक्त्यात्मकं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-सर्वांगुलि-अंगुष्ठ-मुद्रा)।

मन्त्र-जप—एक-सहस्रं (१०००) तदंशं वा।

ॐ ऐं श्रूं नमः सर्व-स्वरूपे, सर्वेशे, सर्व-शक्ति-समन्विते !
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि, दुर्गे देवि ! नमोऽस्तु ते नमो श्रूं ऐं ॐ॥५॥

जप-समर्पण— **गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत्-कृतं जपम्।**
सिद्धिर्मे भवतु देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि !॥

दशांश-होम-तर्पण-मार्जन-कन्या-भोजनं च।

❀ ❀ ❀

(६) 'ॐ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा'—षष्ठ मन्त्र

विनियोग— ॐ अस्य **'ॐ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा'** इति सप्त-श्लोकी-चण्डी-षष्ठ-मन्त्रस्य श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादयो सेन्द्रा सुराः ऋषयः, श्रीमहा-सरस्वती देवता, ह्रौं बीजं, श्रीउषा शक्तिः, श्रीतारादि-दश-महा-विद्याः, सतो-गुण-प्रधानाः त्रिगुणाः, रसना-प्रधानाः पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्तः रसः, वाक्-प्रधाना पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवनं स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि, पञ्च-कलाः ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवनं मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्री-जगदम्बा-योग-माया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्-वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-श्लोकी-चण्डी-षष्ठ-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—श्रीवह्नि-पुरोगमा-ब्रह्मादि-सेन्द्र-सुर -ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, **श्रीमहा-सरस्वती-देवतायै नमः** द्वादशारे—हृदि, **ह्रौं—बीजाय नमः** षडारे—लिङ्गे, **श्रीउषा-शक्त्यै नमः** दशारे—नाभौ, **श्रीतारादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः** षोडशारे—कण्ठे, **सतो-गुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः** अन्तरारे—मनसि, **रसना-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः** ज्ञानेन्द्रिये, **शान्त-रसाय नमः** चेतसि, **वाक्-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः** कर्मेन्द्रिये, **स्तवन-स्वरायः नमः** कण्ठ-मूले, **पञ्च-तत्त्वेभ्यो नमः** गुदे—चतुरारे, **पञ्च-कलाभ्यो नमः** कर-तले, **ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः** पादयोः, **स्तवन-मुद्रायै नमः** सर्वाङ्गे, **मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-योग-माया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्-वीज-स्व-बीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-श्लोकी-चण्डी-षष्ठ-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः** अंजलौ।

षडङ्ग-न्यास—	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ॐ ऐं ह्रौं	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
नमो नमः	**तर्जनीभ्यां स्वाहा**	**शिरसे स्वाहा**

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति

मध्यमाभ्यां वषट्	**शिखायै वषट्**
अनामाभ्यां हुं	**कवचाय हुं**
कनिष्ठाभ्यां वौषट्	**नेत्र-त्रयाय वौषट्**
करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्	**अस्त्राय फट्**

ध्यान— **एन्द्रस्येव शरासनं विदधतीं मध्ये ललाट - प्रभाम्,**
शौक्लीं कान्तिममुष्य गौरिव शिरस्यातन्वतीं सर्वतः।
एषाऽसौ त्रिपुरा हृदि द्युतिरिवोष्मांशोः सदा हि स्थिता,
रोगान् सर्व-भयाननुग्रह-युता हन्ति स्वयं सिद्धिदा ।।

मानस-पूजन—१ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधोमुख-कनिष्ठांगुष्ठ-मुद्रा)। २ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधो-मुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। ३ यं वाय्वात्मकं धूपं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। ४ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-मध्यमा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। ५ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-अनामा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। ६ शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-सरस्वती-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-सर्वांगुलि-मुद्रा)।

मन्त्र-जप—एक सहस्रं (१०००) तदंशं वा

ॐ ऐं ह्रौं नमः रोगानशेषानपहंसि तुष्टा,
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां,
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति नमो ह्रौं ऐं ॐ।।६

जप-समर्पण— गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत्-कृतं जपम्।
सिद्धिर्मे भवतु देवि ! त्वत्-प्रसादान्महेश्वरि !।।

दशांश होम-तर्पण-मार्जन-कन्या-भोजनं च।

❀ ❀ ❀

(७) 'ॐ सर्वा-बाधा-प्रशमनं'—सप्तम मन्त्र

विनियोग— ॐ अस्य **'ॐ सर्वा-बाधा-प्रशमनं'** इति सप्त-श्लोकी-चण्डी-सप्तम-मन्त्रस्य सेन्द्रा सुराः ऋषयः, श्रीमहा-लक्ष्मीः देवता, सें बीजं, श्रीरमा शक्तिः, श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याः, रजो-गुण-प्रधानाः त्रिगुणाः, श्रोतृ-प्रधानाः पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाणि, शान्तः रसः, लिङ्ग-प्रधानाः पञ्च-कर्मेन्द्रियाणि, स्तवनं स्वरः, पञ्च-तत्त्वानि, पञ्च-कलाः, ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनं, स्तवनं मुद्रा, मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा-

योग-माया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्-वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम- पुटितोक्त-सप्त-श्लोकी-चण्डी-सप्तम-मन्त्र-जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—सेन्द्र-सुर-ऋषिभ्यो नमः सहस्रारे—शिरसि, **श्रीमहा-लक्ष्मी-देवतायै नमः** द्वादशारे—हृदि, **सें-वीजाय नमः** षडारे—लिङ्गे, **श्रीरमा-शक्त्यै नमः** दशारे—नाभौ, **श्रीकमलादि-दश-महा-विद्याभ्यो नमः** षोडशारे—कण्ठे, **रजोगुण-प्रधान-त्रिगुणेभ्यो नमः** अन्तरारे—मनसि, **श्रोतृ-प्रधान-पञ्च-ज्ञानेन्द्रियेभ्यो नमः** ज्ञानेन्द्रिये, **शान्त-रसाय नमः** चेतसि, **लिङ्ग-प्रधान-पञ्च-कर्मेन्द्रियेभ्यो नमः** कर्मेन्द्रिये, **स्तवन-स्वराय नमः** कण्ठ-मूले, **पञ्च-तत्त्वेभ्यो नमः** गुदे—चतुरारे, **पञ्च-कलाभ्यो नमः** कर-तले, **ऐं ह्रीं क्लीं उत्कीलनाय नमः** पादयोः, **स्तवन-मुद्रायै नमः** सर्वाङ्गे, **मम क्षेम-स्थैर्यायुरारोग्याभि-वृद्ध्यर्थं श्रीजगदम्बा- योग-माया-भगवती-दुर्गा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं च नमो-युत-प्रणव-वाग्-वीज-स्व-वीज-लोम-विलोम-पुटितोक्त-सप्त-श्लोकी-चण्डी-मन्त्र-जपे विनियोगाय नमः** अञ्जलौ।

षडङ्ग-न्यास—	कर-न्यास	अङ्ग-न्यास
ॐ ऐं सें	**अंगुष्ठाभ्यां नमः**	**हृदयाय नमः**
नमो नमः	**तर्जनीभ्यां स्वाहा**	**शिरसे स्वाहा**
सर्वा-बाधा-प्रशमनं	**मध्यमाभ्यां वषट्**	**शिखायै वषट्**
त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि !	**अनामाभ्यां हुं**	**कवचाय हुं**
एवमेव त्वया कार्यम्	**कनिष्ठाभ्यां वौषट्**	**नेत्र-त्रयाय वौषट्**
अस्मद्-वैरि-विनाशनम्	**करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्**	**अस्त्राय फट्**

ध्यान— **मुख-कमल-विलास-लोल- श्रेणी, विलसित-जित-लोल-भृङ्ग-माला।**
इयमभिनय - दर्शन - प्रवीणा, शमयतु बाधाः मानसं त्वदीयम्॥

मानस-पूजन—१ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः अनुकल्पयामि (अधोमुख-कनिष्ठांगुष्ठ मुद्रा)। **२ हं आकाशात्मकं पुष्पं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (अधोमुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **३ यं वाय्यात्मकं धूपं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-तर्जनी-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **४ रं वह्न्यात्मकं दीपं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-मध्यमा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **५ वं अमृतात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-अनामा-अंगुष्ठ-मुद्रा)। **६ शं शक्त्यात्मकं ताम्बूलं श्रीमहा-लक्ष्मी-श्रीपादुकाभ्यां नमः** अनुकल्पयामि (ऊर्ध्व-मुख-सर्वांगुलि-अंगुष्ठ-मुद्रा)।

मन्त्र-जप—एक शतोपरि एक-सहस्रं (११००) तदंशं च।

ॐ ऐं सें नमः सर्वा-बाधा-प्रशमनं, त्रैलोक्यास्याखिलेश्वरि !
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्-वैरि-विनाशनम नमो सें ऐं ॐ॥ ७॥

दशांश होम-तर्पण-मार्जन-कन्या-भोजनं च।

॥ मन्त्रात्मक—सप्त-श्लोकी-चण्डी-पारायणानुष्ठान-विधिः सम्पूर्णा॥

'अनुभूत साधना' (७)

'बटुक-भैरव-स्तोत्र-घटित चण्डी' साधना

पाठ की विधि

आचमन, प्राणायाम, सङ्कल्प (देश-काल-निर्देश) के उपरान्त—

'अमुक-प्रवरान्वित अमुक-गोत्रोत्पन्नामुक-शर्मणः अमुक-वेदान्तर्गत अमुक-शाखाध्यायी मम (यजमानस्य) शीघ्रं अमुक-दुस्तर-सङ्कट-निवृत्त्यर्थं सप्तशती-माला-मन्त्रस्य क्रमेण प्रथमादि-त्रयोदशाध्यायान्ते क्रियमाण आपदुद्धारक-बटुक-भैरवाष्टोत्तर-शत-नाम-मात्रावर्तन-घटित- अमुक-संख्यकावर्तनमहं करिष्ये।'

उक्त प्रकार **'सङ्कल्प'** में योजना करे। इसके बाद पहले विघ्नों के निवारण के लिए **विघ्नेश, स्वामि-कार्तिक, क्षेत्रपाल, दुर्गा, बटुकाद्यष्ट-भैरव, गौर्यादि षोडश मातृकाओं, ब्राह्म्यादि सप्त माताओं की पूजा** कर उन्हें **'बलि'** प्रदान करे। तब **'आपदुद्धारक-बटुक-भैरव-स्तोत्र'** से युक्त **'सप्तशती'** का पाठ करे।

'पाठ' के बाद **होम, मार्जन, तर्पणादि** करे। जो कर्म न हो सके, उसके लिए द्वि-गुणित **जप** करने से उस कर्म की पूर्ति हो जाती है।

आपदुद्धारणे प्रोक्तं, शिवेन परमात्मना। अस्य पाठाद्विमुच्येत, दुस्तरात् सङ्कटात् पुमान्॥

अस्य पाठाद्विमुच्येत, सङ्कटात् महतः पुमान्। सत्यं सत्यं पुनः सत्यं, त्रिरहं प्रवदामि ते॥

अर्थात्— आपत्ति के निवारण में परमात्मा शिव ने कहा है—इस स्तोत्र का पाठ करने से मनुष्य दुस्तर सङ्कटों से पार हो जाता है। इसके पाठ करने से वह बड़े-बड़े सङ्कटों से मुक्त हो जाता है। सत्य है, सत्य है, सत्य है—यह मैं तीन बार कहता हूँ।

'आपदुद्धारक बटुक-भैरव-स्तोत्र' के **'सप्तशती'-पाठ** में युक्त करने की चार विधियाँ **'मैथिल'-क्रम** द्वारा अनुभूत हैं। यथा—

मैथिलस्य मतेनायं, प्रकाशे वांछिताप्तये। पठेत् पूर्वमेक - वारमापदुद्धारकं स्तवम्॥
ततः शक्रादि-स्तुत्यन्तां, पठेच्चण्डीं च साधकः। आपदुद्धारक-स्तोत्रं, पठेद् वै साधकस्ततः॥
उर्वरीतान् नवाध्यायान्, पठेद् वै साधकस्ततः। आपदुद्धारक-स्तोत्रं च, पुनस्तु प्रपठेत् सुधीः॥
प्राप्नोति तेन सकलान्, कामान् वै साधकोत्तमः॥१

प्रथमान्ते मध्यमान्ते, उत्तरान्ते च साधकः। एकैकावर्तनं कुर्यात्, स्तव-राजस्य साधकः।
सकलान् मानसान् तेन, कामनाप्नोति निश्चितं॥२

अध्यायान्ते पठेत् स्तोत्रं, महदापन्निवृत्तये।।३

उवाच मन्त्रा यावन्तः, सप्त-पञ्चा वसन्ति हि। तत्-तदन्तं पठेत् स्तोत्रं, महदापन्निवृत्तये।
मैथिलानामुपायोऽयमापदुद्धारणे मतः।।४

'यामल' में कहा है कि श्रेष्ठ साधकों के लिए मैथिलों के मत की यह **पाठ-विधि** वाञ्छनीय है। यथा—

☐ १. पहले एक बार **'आपदुद्धारक-बटुक-भैरव-स्तोत्र'** का पाठ करे। इसके बाद **'शक्रादि स्तुति'** का अर्थात् **'श्रीदुर्गा-सप्तशती'** के **'प्रथम से चतुर्थ अध्याय'** का पाठ करे। तब **'आपदुद्धारक बटुक-भैरव-स्तोत्र'** का फिर पाठ करे। इसके बाद **'श्रीदुर्गा-सप्तशती'** के शेष **'नौ अध्यायों'** का पाठ कर फिर **'आपदुद्धारक-बटुक-भैरव-स्तोत्र'** का पाठ करे। इस प्रकार पाठ करने से सभी कामनाओं की पूर्ति होती है।

☐ २. **'सप्तशती'** के **प्रथम चरित** के अन्त में, **मध्यम चरित** के अन्त में और **उत्तम चरित** के अन्त में **'आपदुद्धारक-बटुक-भैरव स्तोत्र'** का एक-एक बार पाठ करे। ऐसा करने से सभी मानसिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं, यह निश्चित है।

☐ ३. **'सप्तशती'** के प्रत्येक अध्याय के अन्त में **'आपदुद्धारक-बटुक-भैरव-स्तोत्र'** का पाठ—महा-आपत्ति की निवृत्ति के लिए करे।

☐ ४. **सप्तशती (चण्डी)** में **'उवाच'**— मन्त्र सत्तावन (५७) हैं। प्रत्येक **'उवाच'**-मन्त्र के अन्त में **'आपदुद्धारक-बटुक-भैरव-स्तोत्र'** का पाठ (कुल ५७ पाठ) महान् आपत्ति के निवारण के लिए करे।

इस प्रकार उक्त **चार विधियों** में से किसी भी प्रकार **सप्तशती (चण्डी) का पाठ** करने से कैसा भी दुस्तर सङ्कट निवृत्त होता है तथा इच्छित फल भी प्राप्त होता है।

जयति श्रीचण्डिका

जयति श्रीचण्डिका चण्डि चण्डीश्वरी, चण्ड - कर्मा महा - शक्ति-धर्मा।
गुण - त्रयाधार त्रय-गुण परा-मर्षिणी, कर्षिणी स्तम्भिनी दिव्य वर्मा।।
मारिणी मोहिनी शुम्भ - संहारिणी, रक्त - बीजादि भय-हारि कर्मा।
जयति विश्वेशि सुर-रक्षिणी पालिनी, जन्म-दायिनि विधायिनि वि-कर्मा।।
शोषिणी प्लाविनी शक्ति पर-देवता, अगण गुण कर्म-कालिनि अ-कर्मा।
विश्व - विश्वेश्वरी सर्व - सर्वेश्वरी, एक आनन्द-दायिनी सु-शर्मा।।
रण-धरा जय-प्रदायिनि परात्पर-परा, विश्व-क्षय-कर्म परं-शान्ति-धर्मा।
भय-भया भय-वहा पूर्ण करुणा-करा, 'मोती' भव-तार गुण सार-कर्मा।।

—गुप्तावतार बाबाश्री

'अनुभूत साधना' (८)

'रूप-सप्त-श्लोकी चण्डी' साधना

('रूपं देहीति' एवं 'नवार्ण'-मन्त्र-सहित 'सप्त-श्लोकी-चण्डी' साधना)

सङ्कल्प— ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे श्वेत-वराह-कल्पे जम्बू-द्वीपे भरत - खण्डे आर्यावर्त्त - देशे **अमुक**-पुण्य-क्षेत्रे कलि - युगे कलि-प्रथम-चरणे **अमुक**-संवत्सरे **अमुक**-मासे **अमुक**-पक्षे **अमुक**-तिथौ **अमुक**-वासरे **अमुक**-गोत्रोत्पन्नो **अमुक**-नाम - शर्मा (वर्मा - गुप्तो-दासो वाऽहं) श्रीमहा - काली - महा - लक्ष्मी - महा - सरस्वती - देवता - प्रीति-पूर्वक सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थं रूपं देहीति संयोज्य नवार्ण-मनुना सह सप्त-श्लोकी चण्डी-मन्त्रस्य अमुक-संख्यक-जपं करिष्यामि।

ध्यान— ॐ विद्युद्-दाम-सम-प्रभां मृग-पति-स्कन्ध-स्थितां भीषणाम्,
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्-हस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्र-गदाऽसि - खेट - विशिखाँश्चापं गुणं तर्जनीम्,
विभ्राणामनलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

मानस-पूजन— उक्त प्रकार **'ध्यान'** करने के बाद **माँ दुर्गा का मानसिक पूजन करे—**

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ शं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीजगदम्बा-दुर्गा-प्रीतये समर्पयामि नमः।

'मानस-पूजन' करने के बाद **'रूपं देहीति'**-संयोज्य **'नवार्ण मन्त्र'**-सहित **'सप्त-श्लोकी चण्डी'** का **'जप'** करे। यथा—

(१)

रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि मे। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।
महिषघ्नि महा - माये! चामुण्डे मुण्ड - मालिनि! आयुरारोग्यमैश्वर्यं, देहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

ज्ञानिनामपि चेतांसि, देवी भगवती हि सा। बलादाकृष्य मोहाय, महा-माया प्रयच्छति।।१

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि मे। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।
महिषघ्नि महा - माये! चामुण्डे मुण्ड - मालिनि! आयुरारोग्यमैश्वर्यं, देहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

(२)

रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि मे। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।
महिषघ्नि महा - माये! चामुण्डे मुण्ड - मालिनि! आयुरारोग्यमैश्वर्यं, देहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

दुर्गे! स्मृता हरसि भीतिमशेष-जन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव-शुभां ददासि।
दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्र - चित्ता।।२

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि मे। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।
महिषघ्नि महा - माये! चामुण्डे मुण्ड - मालिनि! आयुरारोग्यमैश्वर्यं, देहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

(३)

रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि मे। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।
महिषघ्नि महा - माये! चामुण्डे मुण्ड - मालिनि! आयुरारोग्यमैश्वर्यं, देहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

सर्व-मङ्गल-मङ्गल्ये! शिवे! सर्वार्थ-साधिके! शरण्ये! त्र्यम्बके! गौरि! नारायणि! नमोऽस्तु ते।।३

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि मे। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।
महिषघ्नि महा - माये! चामुण्डे मुण्ड - मालिनि! आयुरारोग्यमैश्वर्यं, देहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

(४)

रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि मे। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।
महिषघ्नि महा - माये! चामुण्डे मुण्ड - मालिनि! आयुरारोग्यमैश्वर्यं, देहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे! सर्वस्यार्ति-हरे! देवि! नारायणि! नमोऽस्तु ते।।४

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि मे। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।
महिषघ्नि महा - माये! चामुण्डे मुण्ड - मालिनि! आयुरारोग्यमैश्वर्यं, देहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

(५)

रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि मे। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।
महिषघ्नि महा - माये! चामुण्डे मुण्ड - मालिनि! आयुरारोग्यमैश्वर्यं, देहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

सर्व-स्वरूपे! सर्वेशे! सर्व-शक्ति-समन्विते! भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे! देवि! नमोऽस्तु ते।।५

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि मे। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।
महिषघ्नि महा - माये! चामुण्डे मुण्ड - मालिनि! आयुरारोग्यमैश्वर्यं, देहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

(६)

रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि मे। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।
महिषघ्नि महा - माये! चामुण्डे मुण्ड - मालिनि! आयुरारोग्यमैश्वर्यं, देहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा, रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणाम्, त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।।६

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि मे। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।
महिषघ्नि महा - माये! चामुण्डे मुण्ड - मालिनि! आयुरारोग्यमैश्वर्यं, देहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

(७)

रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि मे। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।
महिषघ्नि महा - माये! चामुण्डे मुण्ड - मालिनि! आयुरारोग्यमैश्वर्यं, देहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

सर्वा-बाधा-प्रशमनं, त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि! एवमेव त्वया कार्यमस्मद्-वैरि-विनाशनम्।।७

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

रूपं देहि यशो देहि, भगं भगवति! देहि मे। पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामाँश्च देहि मे।।
महिषघ्नि महा - माये! चामुण्डे मुण्ड - मालिनि! आयुरारोग्यमैश्वर्यं, देहि देवि! नमोऽस्तु ते।।

'श्रीदुर्गार्चन-स्तोत्र' साधना

(नित्य पठनीय श्रीदुर्गा-स्तुति)

'पद्म-पुराण' के **'सृष्टि'**-खण्ड में एक छोटी-सी **'श्रीदुर्गा-स्तुति'** है। इस **'दुर्गा-स्तुति'** के नित्य सुनने या पढ़ने से सभी पापों से छुटकारा मिलता है और **'श्रीदुर्गा-लोक'** की प्राप्ति होती है। अतः जो बन्धु लाभ उठाना चाहें, वे इस **'स्तुति'** को भी कण्ठस्थ कर लाभ उठा सकते हैं। यह **'स्तुति'** लघु होने के कारण शीघ्र कण्ठस्थ हो जाती है और चलते-बैठते, उठते-फिरते इसे दोहराया जा सकता है। यही नहीं, सभी प्रकार की **'साधना'** में इसे अन्त में भाव-वर्धन के रूप में सम्मिलित भी किया जा सकता है। **—सम्पादक**

श्रीदुर्गार्चन-स्तोत्रं

दुर्गां शिवां शान्ति-करीं, ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम्।
सर्व-लोक-प्रणेत्रीं च, प्रणमामि सदाऽम्बिकाम्[१]।।१

मङ्गलां शोभनां शुद्धां, निष्कलां परमां कलाम्।
विश्वेश्वरीं विश्व-वन्द्यां[२], चण्डिकां प्रणमाम्यहम्।।२

सर्व-देव-मयीं देवीं, सर्व - देव - नमस्कृताम्[३]।
ब्रह्मेश-विष्णु- नमितां, प्रणमामि सदाऽप्युमाम्[४]।।३

विन्ध्यस्थां विन्ध्य-निलयां, दिव्य-स्थान-निवासिनीं।
योगिनीं योग-विद्यां[५] च, चण्डिकां प्रणमाम्यहम्।।४

ईशान - मातरं देवीमीश्वरीमीश्वर - प्रियाम्।
प्रणतोऽस्मि सदा दुर्गां, संसारार्णव - तारिणीम्।।५

।।फल-श्रुति।।

इदं यः पठते नित्यं, शृणुयाद् वापि भक्तितः।
स मुक्तः सर्व-पापेभ्यो, दुर्गा-लोके महीयते।।१

।।पद्म-पुराणे सृष्टि-खण्डे श्रीदुर्गार्चन-स्तोत्रं।।

पाठ-भेद—१ सदा-शिवाम्, २ विश्व-मातां, ३ सर्व-रोग-भयापहां, ४ सदा उमां, ५ योग-मातां।

अनुभूत साधना (१०)

'सिद्ध-चण्डी-स्तोत्र' साधना

(परम पूज्य श्रीपाद मुक्तानन्द जी की कृपा से प्राप्त)

विनियोग–ॐ अस्य श्रीमदाद्या भगवती सिद्ध-चण्डी महा-विद्या-मन्त्रस्य सर्व-श्रीमार्कण्डेय-सुमेधा ऋषी, गायत्र्यादि नाना-विधानि छन्दांसि, नव-कोटि-शक्ति-सहिता श्रीमदाद्या भगवती सिद्ध-चण्डी देवता, श्रीमदाद्या भगवती सिद्ध-चण्डी-प्रसादादखिलेष्टार्थे पाठे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास – सर्व-श्रीमार्कण्डेय-सुमेधा-ऋषिभ्यां नमः शिरसि, गायत्र्यादि-नाना-विधेभ्यो छन्देभ्यो नमः मुखे, नव-कोटि-शक्ति-सहिता-श्रीमदाद्या-भगवती-सिद्ध-चण्डी-प्रसादादखिलेष्टार्थे पाठे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

मन्त्र-न्यास–ॐ श्रीं नमः सहस्त्रारे। ॐ ह्रीं नमः भाले। ॐ क्लीं नमः नेत्रयोः। ॐ ऐं नमः कर्ण-द्वये। ॐ सौं नमः द्वय-नासा-पुटे। ॐ ऐं नमः मुखे। ॐ ह्रीं नमः कण्ठे। ॐ श्रीं नमः हृदये। ॐ ऐं नमः हस्त-युगे। ॐ क्लीं नमः उदरे। ॐ सौं नमः कट्यां। ॐ ऐं नमः गुह्ये। ॐ क्लीं नमः जङ्घा-युगे। ॐ ह्रीं नमः जानु-द्वये। ॐ श्रीं नमः पादादि-सर्वाङ्गे।

ध्यान –

या माया मधु-कैटभ-प्रमथनी, या माहिषोन्मूलिनी,
या धूम्रेक्षण-चण्ड-मुण्ड-दलनी, या रक्त-वीजाशनी ।
शक्तिः शुम्भ-निशुम्भ-दैत्य-मथिनी, या सिद्ध-लक्ष्मी परा,
सा देवी नव-कोटि-मूर्ति-सहिता, मां पातु विश्वेश्वरी ।।

मन्त्र–ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्यौं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौं ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।

जय जय महा-लक्ष्मी जगदाद्ये, बीज-सुरासुर-त्रिभुवन-निदाने, दयांकुरे, सर्व-तेजो-रूपिणि, विरञ्चि-संस्तुते, विधि-वरदे, सच्चिदानन्दे, विष्णु-देह-व्रते, महा-मोहिनि, मधु-कैटभ-जिह्वासिनि, नित्य-वरदान-तत्परे, महा-स्वाध्याय-वासिनि, महा-महा-तेज-धारिणि, सर्वाधारे, सर्व-कारण-कारिणि, अचिन्त्य-रूपे, इन्द्रादि-निखिल-निर्जर-सेविते, साम-गान-गायन्ती-पूर्णोदय-कारिणि! विजये, जये, जयति, अपराजिते, सर्व-सुन्दरि, रक्तांशुके, शशाङ्क-कोटि-सुशीतले, अग्नि-कोटि-दहन-शीले, यम-कोटि-क्रूरे, वायु-कोटि-सुशीतले, ॐकार-नाद-बिन्दु-रूपिणि, निगमागम-मार्ग-दायिनि ! महिषासुर-निर्दलिनि, धूम्र-लोचन-वध-परायणे, चण्ड-मुण्डादि-शिरः-छेदनि, रक्त-बीजादि-रुधिर-शोषिणि, रक्त-पान-प्रिये, महा-योगिनि, भूत-वेताल-भैरवादि-तुष्टि-विधायिनि, शुम्भ-निशुम्भ-शिरच्छेदिनि, निखिलासुर-बल-खादिनि, त्रि-दश-राज्य-दायिनि, षड्-रिपु-अष्ट-पाश-विनिर्मुक्ते, स्वयम्भू-प्रियेश्वरि, भक्तस्य अभीष्ट-सिद्धि-दायिनि !

श्री-प्रिया-मुक्त-पुष्पाञ्जलि-स्वरूपिणि, श्रीपाद-मुक्तानन्दानन्द-प्रदायिनि, स्वयं श्री-श्री-निवास-श्रेयस-निरसानन्द-नाथ-पौरुषी-शरभान्तर्गत-कोटि-कोटि-मन्त्र-विलासिनि, विश्व- मोहिनि, स्वयमाद्या-श्रीं-मोती-मन्त्र-प्रमोदानन्द-प्रदायिनि! अगण-ग्रह-नक्षत्र-काल-व्यापिनि! महा-दुर्गे, दुर्गति-दुर्मन-विनाशिनि, सर्व-ज्ञान-प्रदायिनि, जय-विजय-स्वरूपिणि, जय दुर्गे भवानि! पाहि माम्, त्राहि माम्, रक्ष माम्।

सर्व-स्त्री-रत्न-रूपिणि, दिव्य-देहे, निर्गुणे सगुणे सदसद्-रूप-धारिणि, सुर-वरदे, भक्त-त्राण-तत्परे, वर-वरदे सहस्त्राक्षरे, अयुताक्षरे, सप्त-कोटि-चामुण्डा-रूपिणि, नव-कोटि-कात्यायनि-रूपे, लक्ष्यालक्ष्य-स्वरूपे, इन्द्राणि, ब्रह्माणि, रुद्राणि, ईशानि, भ्रामरि, भीमे, नारसिंहे, त्रय-त्रिंशत्-कोटि-देवते, अनन्त-कोटि-ब्रह्माण्ड-नायिके, चतुश्शत-मुनि-जन-संस्तुते, सप्त-कोटि-मन्त्र-स्वरूपे, महा-काल-रात्रि-प्रकाशे, कला-काष्ठादि-रूपिणि, चतुर्दश-भुवन-भावाविकारिणि, गरुड़-गामिनि !

क्रों ह्रों ह्रीं श्रीं लें जुं सौं ऐं क्लें ह्यों हौं ह्यौं नाना-बीज-कूट-निर्मित-शरीरे, नाना-बीज-मन्त्र-राग-विराजिते, सकल-सुन्दरी-गण-सेविते, करुण-रस-कल्लोलिनि, कल्प-वृक्षाधिष्ठिते, चिन्तामणि-द्वीपावस्थिते, मणि-मन्दिर-निवासे, चापिनि, खड्गिनि, चक्रिणि, गदिनि, शङ्खिनि, पद्मिनि, निखिल-भैरवादि-यति-समस्त-योगिनी-परिवृते।

कालि, कङ्कालि, तारे, तुतारे, तुरे, तोतले, ज्वाला-मुखि, छिन्न-मस्तके, भुवनेश्वरि, सर्वेश्वरि, त्रिपुरे, लोक-जननि, विष्णु-वक्षः-स्थलालङ्कारिणि, अजिते, अमिते, अमराधिपे, अनूप-सरिते, गर्भ-वासादि-दुःखापहारिणि, भुक्ति-मुक्ति-क्षेमादि-दायिनि, शिवे, शान्ते, कुमारी-देवि, सूक्त-दशाक्षरे, चण्डि, चामुण्डे, महा-कालि, महा-लक्ष्मि, महा-सरस्वति, त्रयी-विग्रहे, कुल-पूर्णे! प्रसीद प्रसीद, सर्वे-मनोरथान् पूरय पूरय, सर्वारिष्ट-विघ्नं छेदय छेदय, सर्व-ग्रह-पीडा-ज्वरोग्र-भयं विध्वंसय विध्वंसय, सर्व-त्रिभुवन-जातं वशय वशय, मोक्ष-मार्गं दर्शय दर्शय, ज्ञान-मार्गं प्रकाशय प्रकाशय, अज्ञान-तमो नाशय नाशय, धन-धान्यादि-समृद्धिं कुरु कुरु, सर्व-कल्याणं कल्पय कल्पय, मां रक्ष रक्ष, सर्वापदेभ्यो निस्तारय निस्तारय, मम वज्र-शरीरं साधय साधय।

ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमोऽस्तु स्वाहा ।
ऐं ह्रीं क्लीं नमो देव्यै महा-देव्यै, शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै, नियताः प्रणताः स्म ताम् ।।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सर्व-मङ्गल-माङ्गल्ये, शिवे सर्वार्थ-साधिके!
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि! नमोऽस्तु ते ।।
सर्व-स्वरूपे सर्वेशे, सर्व-शक्ति-समन्विते !
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि ! दुर्गे देवि ! नमोऽस्तु ते ।।

❖❖❖

विशेष

सम्पुट-प्रयोग

आगे प्रकाशित 'अनुभूत साधना' (सप्त-श्लोकी दुर्गा, त्रयोदश-श्लोकी दुर्गा, मूल सप्तशती एवं गुप्त सप्तशती) को कुछ समय नित्य नियमित करने के बाद, उनके द्वारा जब भौतिक तथा आध्यात्मिक रूप से अनुभूतियों की प्राप्ति होने लगे, तब 'अनुभूत साधना' के मन्त्रों के आगे अथवा आगे-पीछे दोनों तरफ सम्पुट लगाकर विशेष प्रकार के लाभों की प्राप्ति हेतु प्रयास करना चाहिए।

सप्त-श्लोकी दुर्गा के सात मन्त्रों, त्रयोदश-श्लोकी दुर्गा के तेरह मन्त्रों, मूल सप्तशती के पाँच उवाच मन्त्रों के सहित पच्चहत्तर मन्त्रों एवं गुप्त सप्तशती के दस मन्त्रों के आगे अथवा आगे-पीछे दोनों ओर विशेष प्रकार के सम्पुट लगाकर जप करने से विशेष फलों की प्राप्ति होती है। यथा-

१. प्रत्येक मन्त्र को **वाग्-बीज (ऐं)** से सम्पुटित कर नित्य सौ बार जप करने से विद्या की प्राप्ति होती है।

२. प्रत्येक मन्त्र के आगे व पीछे दोनों ओर **प्रणव (ॐ)** से सम्पुटित कर जप करने से सभी मन्त्र जाग्रत हो जाते हैं।

३. प्रत्येक मन्त्र के आगे '**ॐ भूर्भुवः स्वः**' तथा पीछे '**स्वःभुवर्भू ॐ**' लगाकर नित्य सौ बार जप करने से शीघ्र मन्त्र-सिद्धि होती है।

४. प्रत्येक मन्त्र के आगे **अनुलोम मृत्युञ्जय मन्त्र (ॐ जूं सः)** तथा पीछे **विलोम मृत्युञ्जय मन्त्र (सः जूं ॐ)** लगाकर नित्य जप करने से मृत्यु-तुल्य कष्टों एवं अकाल मृत्यु से रक्षा होती है।

५. प्रत्येक मन्त्र को '**श्री दुर्गा सप्तशती**' के '**शूलेन पाहि नो देवि०**' मन्त्र से सम्पुटित कर जप करने से भी अकाल मृत्यु का निवारण होता है।

६. प्रत्येक मन्त्र को '**श्री दुर्गा सप्तशती**' के '**शरणागत-दीनार्त्त०**' मन्त्र से सम्पुटित कर जप करने से सभी प्रकार के कार्यों में सफलता प्राप्त होती है।

७. प्रत्येक मन्त्र को '**श्री दुर्गा सप्तशती**' के अर्द्ध-श्लोक '**करोतु सा नः शुभ-हेतुरीश्वेरी०**' मन्त्र से सम्पुटित कर जप करने से भी सभी प्रकार के कार्यों में सफलता प्राप्त होती है।

८. प्रत्येक मन्त्र को '**श्री दुर्गा सप्तशती**' के '**दुर्गे स्मृता०**' मन्त्र से सम्पुटित कर जप करने से सभी प्रकार की बाधाओं का निवारण होता है।

९. प्रत्येक मन्त्र को '**श्री दुर्गा सप्तशती**' के '**सर्वा - बाधा०**' मन्त्र से सम्पुटित कर जप करने से सभी प्रकार के सङ्कटों का निवारण होता है।

१०. प्रत्येक मन्त्र को '**श्री दुर्गा सप्तशती**' के '**इत्थं यदा यदा बाधा०**' मन्त्र से सम्पुटित कर नित्य सौ बार जप करने से महामारी की शान्ति होती है।

११. प्रत्येक मन्त्र को 'श्री दुर्गा सप्तशती' के 'ततो वव्रे नृपो राज्यं०' मन्त्र से सम्पुटित कर नित्य जप करने से नष्ट हुई प्रतिष्ठा, लक्ष्मी आदि की पुनः प्राप्ति होती है।

१२. प्रत्येक मन्त्र को **'श्री दुर्गा सप्तशती'** के **'रोगानशेषानपहंसि०'** मन्त्र से सम्पुटित कर जप करने से सभी प्रकार के रोगों का नाश होता है।

१३. प्रत्येक मन्त्र को **'श्री दुर्गा सप्तशती'** के **'देवि! प्रपन्नार्ति-हरे! प्रसीद०'** मन्त्र से सम्पुटित कर जप करने से सभी प्रकार की कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

१४. प्रत्येक मन्त्र को **'श्री - सूक्त'** की ऋचा **'कांसोऽस्मि तां हिरण्य-प्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीं। पद्मे स्थितां पद्म-वर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।'** से सम्पुटित कर जप करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

१५. प्रत्येक मन्त्र को **'काम-बीज' (क्लीं)** से सम्पुटित कर जप करने से सभी प्रकार के कार्यों में सफलता प्राप्त होती है।

१६. प्रत्येक मन्त्र को **'माया-बीज' (ह्रीं)** से सम्पुटित कर ११ बार नित्य जप करने से सभी प्रकार के उपद्रवों का नाश होता है।

१७. प्रत्येक मन्त्र को **'श्री-बीज' (श्रीं)** से सम्पुटित कर ४९ दिन ५० बार नित्य जप करने से धन-वैभव की प्राप्ति होती है।

१८. प्रत्येक मन्त्र को **'ॐ गं गणपतये नमः'** से सम्पुटित कर जप करने से भगवान् गणेश की कृपा की प्राप्ति होती है।

१९. प्रत्येक मन्त्र को **'ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्य श्रीं'** से सम्पुटित कर जप करने से भगवान् सूर्य की कृपा की प्राप्ति होती है और सूर्य - ग्रह - जनित बाधाएँ नष्ट होती हैं।

२०. प्रत्येक मन्त्र को **'ॐ ह्रीं श्रीं म्लां मं मङ्गलाय नमः'** से सम्पुटित कर जप करने से मङ्गल- ग्रह - जनित बाधाएँ दूर होती हैं।

२१. प्रत्येक मन्त्र को **'ॐ शं शनैश्चराय नमः'** से सम्पुटित कर जप करने से शनि - बाधा का निवारण होता है।

२२. प्रत्येक मन्त्र को **'रां राहवे नमः'** एवं **'कें केतवे नमः'** से सम्पुटित कर जप करने से काल- सर्प - दोष का निवारण होता है।

२३. प्रत्येक मन्त्र को शिव-बीज **'हौं'** से सम्पुटित कर जप करने से भगवान् शिव की कृपा की प्राप्ति होती है और सभी बाधाओं का नाश होकर सभी कामनाएँ पूरी होती हैं।

२४. प्रत्येक मन्त्र को अपने इष्ट-देवता के मन्त्र से सम्पुटित कर जप करने से अपने इष्ट-देवता की कृपा की प्राप्ति होती है।

२५. प्रत्येक मन्त्र को **'ॐ ह्रीं बटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु वटुकाय ह्रीं'** मन्त्र से सम्पुटित कर जप करने से भगवान् बटुक - भैरव की कृपा की प्राप्ति होती है।

'चण्डी'-आध्यात्मिक पुस्तक-माला की महत्त्व-पूर्ण प्रस्तुति

महा-पर्व 'नवरात्र'-विशोषाङ्क

नव-रात्र-व्रत-पूर्वक महा-पूजा
श्रीदुर्गोत्सव-विवेक
'नवरात्र'-महिमा और 'नवरात्र'-पूजन
'नवरात्र'-अर्चा की प्राचीनता
'नवरात्र'-महोत्सव की भावना
नव-चण्डी-विधान
श्रीचण्डी-पूजा
शारदीय नवरात्र-रहस्य
नव-पत्रिका-पूजन
'नवरात्र' में 'कलश'-स्थापना
श्रीदुर्गा-विधान
श्रीदुर्गा-पूजा की विशिष्ट विधियाँ
'कलश' एवं 'जयन्ती' का माहात्म्य
भगवती दुर्गा का मानसिक पूजन
भगवती श्रीदुर्गा का षोडशोपचार पूजन
श्रीदुर्गा-स्तवन प्रयोग-विधि
श्रीवन-दुर्गा-विधान
'श्रीदुर्गे! स्मृतेति'-मन्त्र की साधना
श्रीमहा-नवार्ण-मन्त्र की साधना-विधि
श्रीशूलिनी सुमुखीकरण स्तोत्र
श्रीदुर्गा-पूजाङ्ग-होम-विधि
श्री बृहत् महा-सिद्ध कुञ्जिका स्तोत्रम्
'सप्तशती'-पाठ की महत्त्व-पूर्ण विधियाँ
'कालिका'-पुराणानुसार 'नवरात्र'-पूजा-पद्धति
कुमारी-पूजा, देवी-नैवेद्य
शरत्-पूर्णिमा : 'लक्ष्मी-इन्द्र-कुबेर-पूजन'

अनुदान : १०० रु०

प्राप्ति-स्थान : श्री चण्डी-धाम, प्रयाग-२११००६ ०५३२-२५०२७८३

रजि० सं० ३२९८१/५७

अनुभूत साधना

'सप्त-श्लोकी दुर्गा' साधना

'त्रयोदश-श्लोकी दुर्गा' साधना

'मूल सप्तशती' साधना

'गुप्त सप्तशती' साधना

'श्रीगर्भ-चण्डी' साधना

'मन्त्रात्मक सप्त-श्लोकी दुर्गा' साधना

'बटुक-भैरव-स्तोत्र-घटित चण्डी' साधना

'रूप-सप्त-श्लोकी चण्डी' साधना

'श्रीदुर्गार्चन-स्तोत्र' साधना

'सिद्ध-चण्डी-स्तोत्र' साधना

प्रकाशक : श्रीऋतशील शर्मा, श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-६ ☎ ०९४५०२२२७६७